ओ३म्
आर्य जगत
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 18 दिसम्बर 2016 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 18 दिसम्बर 2016 से 24 दिसम्बर 2016

पौ. कृ. – 05 ● वि० सं०–2073 ● वर्ष 58, अंक 53, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल पंचकूला में आर्य समाज का 19वाँ वार्षिक उत्सव सम्पन्न

हवन के द्वारा पर्यावरण की शुद्धि तथा मानव मन की शांति के लिए एवं छात्रों को वैदिक संस्कारयुक्त करने के लिए आर्य समाज, हंसराज पब्लिक स्कूल पंचकूला के 19वें वार्षिक समागम पर **'वेदोपदेश माला'** का आयोजन किया गया। इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में हर दिन सुबह विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन हुआ, जिसमें छात्रों ने भजन गाए, प्रार्थनाएँ कीं और आर्य समाज के महापुरुषों के जीवन उद्देश्य से सभी को जागरूक किया।

प्रतिदिन भजन–संध्या का आयोजन भी किया गया जहाँ पर मुख्य उपदेशक, महात्मा चैतन्य मुनि, माता सत्यप्रियायति जी ने अपने मधुर भजनों तथा प्रवचनों से सुंदर समा बांधा।

समारोह का समापन 26 नवंबर को छात्रों द्वारा सम्पन्न किए गये 101 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का साथ हुआ जिसकी अध्यक्षता महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश, आचार्य देवव्रत जी के द्वारा की गई। महामहिम राज्यपाल छात्रों को यज्ञ करते देख कर अत्यंत प्रसन्न हुए। इस अवसर पर उन्होंने कहा "हवन हमारे दैनिक जीवन का आवश्यक अंग होना चाहिए क्योंकि इसके द्वारा वातावरण का प्रदूषण समाप्त किया जा सकता है।"

राज्यपाल महोदय ने विद्यालय में नवनिर्मित **'आनंद स्वामी ब्लॉक'** का उद्घाटन भी किया जो कि विशेष तौर पर सीबीएसई के छात्रों के लिए तैयार किया गया। उल्लेखनीय है कि "सीबीएसई का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्यक्रम है जहाँ पर छात्रों को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार शिक्षा प्रदान की जाती है। इस अवसर पर ट्राईसिटी के गणमाण्य आर्य महानुभावों सहित विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्यों तथा विभिन्न स्कूलों के छात्रों तथा आर्यसमाज सैक्टर–9 के सदस्यों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

प्रधानाचार्य श्रीमती जया भारद्वाज ने सभी अतिथियों का धन्यवाद करते हुए कहा "आज के युग में प्रदूषण के कारण पृथ्वी ग्रह खतरे में है तथा मानवीय मूल्यों का निरंतर ह्रास हो रहा है। ऐसे में यह हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करते रहें जिससे पर्यावरण की शुद्धि हो तथा हमारी भावी पीढ़ी उच्च जीवन मूल्यों से संस्कारित हो जाए।"

कार्यक्रम के अंत में सभी ने ऋषि लंगर प्रसाद के रूप में ग्रहण किया।

एम.आर.डी.ए.वी. सोलन में आर्य युवा समाज के तत्वावधान में 101 कुण्डीय यज्ञ का हुआ आयोजन

एम.आर.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सोलन में डी.ए.वी. के संस्थापक महात्मा हंसराज जी कि पुण्य तिथि को अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्य युवा समाज के तत्वावधान में स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती अनुपमा शर्मा के मार्गदर्शन में विद्यालय की खुशहाली, पर्यावरण संरक्षण तथा विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षाओं के लिए शुभेच्छा प्रदान करते हुए 101 कुण्डीय वैदिक यज्ञ का आयोजन बड़े हर्षोल्लास के साथ किया गया।

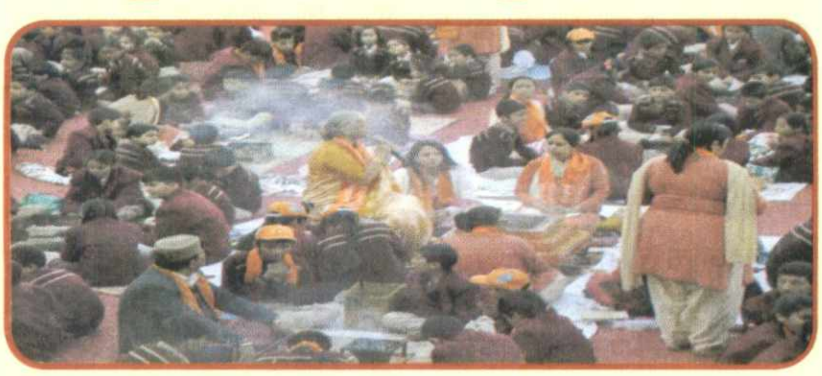

इस वैदिक यज्ञ का शुभारंभ प्रातः गायत्री वन्दना के साथ किया गया। उसके बाद हितैषी शर्मा तथा सृष्टि द्वारा मधुर भजन 'हे ज्ञानवान भगवन् हमको भी ज्ञान दे दो' प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् विद्यालय के सभी विद्यार्थियों सहित अध्यापक वर्ग व गैर–अध्यापक वर्ग के सभी सदस्यों ने इस वैदिक देवयज्ञ में उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ डालीं। इस अवसर पर बड़ी संख्या में आर्यसमाज से जुड़े हुए अभिभावक भी उपस्थित रहे। इस दौरान सम्पूर्ण विद्यालय का वातावरण यज्ञमय हो गया। इस 101 कुण्डीय यज्ञ को विद्यालय के आर्य युवा समाज के विद्यार्थियों ने बड़ी ही कुशलता पूर्वक सम्पन्न किया। इस के बाद बच्चों ने ईश्वर–भक्ति व स्वामी दयानन्द तथा महात्मा हंसराज जी के जीवन से संबंधित मधुर गीत प्रस्तुत किए।

यज्ञ के उपरांत प्रधानाचार्या श्रीमती अनुपमा शर्मा ने आर्यसमाज का सदस्य बने अभिभावकों को सम्बोधित करते हुए **''यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म''**, एवं **''स्वर्गकामो जयेत्''** का प्रेरक संदेश दिया। उन्होंने बताया कि, ''देवयज्ञ देवताओं की पुष्टि अर्थात् पर्यावरण की शुद्धि के लिए किया जाता है। हवन के द्वारा अग्नि, वायु आदि कीं शुद्धि होती है। वेद–मंत्रों का उच्चारण, अग्नि और आहुतियों का प्रभाव पर्यावरण पर पड़ता है। इससे प्राणी मात्र का कल्याण होता है। यह भारतीय संस्कृति की अनुपम भेंट है जिसे महर्षि स्वामी दयानन्द ने पुनः घर–घर तक पहुंचाने का महान कार्य किया है। देवयज्ञ वातावरण के साथ–साथ हमारे विचारों को भी परिमार्जित करता है।

अंत में प्रधानाचार्या ने वार्षिक परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए दुर्गुणों का त्याग करते हुए सद्गुणों को धारण करने के लिए प्रेरित किया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – **पूनम सूरी**

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 18 नवम्बर 2016 से 24 दिसम्बर 2016

त्रिविध पवित्रता

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

पऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतु:, त्रीष पवित्रा हृद्यन्तरा दधे।
विद्वान्त्स विश्वा भुवनाभि पश्यति, अवाजुष्टान् विध्यति कर्ते अव्रतान्।।

ऋग् ९.७३.८

ऋषिः **पवित्रः आङ्गिरसः** । देवता **पवमानः सोमः** । छन्दः **जगती** ।

● **(ऋतस्य)** सत्य का, **(गोपा:)** रक्षक, **(सुक्रतु:)** शुभ प्रज्ञानों और शुभ कर्मों वाला (सोम प्रभु), **(दभाय न)** हिंसा या उपेक्षा किये जाने योग्य नहीं है।, **(स:)** वह, **(हृदि अन्त:)** हृदय के अंदर, **(त्री पवित्रा)** तीन पवित्रों को–विचार, वचन और कर्म की पवित्रताओं को, **(आ दधे)** स्थापित करता है।, **(विद्वान्)** विद्वान्, **(स:)** वह, **(विश्वा)** समस्त, **(भुवना)** भूतों को, **(अभि पश्यति)** देखता है, **(अजुष्टान्)** अप्रिय, **(अव्रतान्)** व्रत़–हीनों को, **(कर्ते)** अंध कूप में, **(विध्यति)** धकेलता है।

● 'सोम' रमात्मा 'ऋत' का संरक्षक और अनृत का घर्षक है। जहाँ भी वह सत्य को पाता है, उसे प्रश्रय देता है। वह 'सुक्रतु' है, शुभ प्रज्ञानों, शुभ विचारों, शुभ संकल्पों और शुभ कर्मों से युक्त है और अपने सम्पर्क में आनेवाले मानवों को भी वैसा ही बनाना चाहता है। परन्तु मानव को सत्य पथ का पथिक तथा 'सुक्रतु' वह तभी बना सकता है, जब मानव उसकी शरण में जाए, उसे आत्म–समर्पण करे, उसे अपने हृदय–मन्दिर में उपास्य देव के रूप में प्रतिष्ठित करे। यदि मानव जीवन में उसकी हिंसा या उपेक्षा ही करता रहेगा, तो उससे मिलनेवाली 'सत्य' और 'शुभक्रतु' की प्रेरणा से वह वंचित ही रहेगा। अत: 'पावनकर्ता' सोमप्रभु किसी से कभी भी उपेक्षणीय नहीं है।

'सोम' प्रभु जब अपने उपासक को पवित्र करना चाहता है, तब उसके हृदय में तीन 'पवित्रों' को स्थापित कर देता है। वे तीन हैं विचार की पवित्रता, वाणी की पवित्रता और कर्म की पवित्रता। मनुष्य के विचार ही वाणी और कर्म के रूप में प्रतिफलित हुआ करते हैं, अत: वाणी और कर्मों को पवित्र बनाने के लिए सर्वप्रथम विचारों की पवित्रता आवश्यक है। यदि किसी मनुष्य के विचार अपवित्र हैं, मन में वह पाप–चिंतना करता रहता है, तो वाणी या कर्म से पाप न भी करे, तो भी वेद–शास्त्र उसे पापी कहते हैं। अत: प्रभु प्रथम अपने कृपापात्र मनुष्य से मन को पवित्र करता है, फिर उस पवित्रता को क्रमश: वाणी और कर्म में भी प्रतिमूर्त कर देता है। 'सोम प्रभु' विद्वान् है, वह प्रत्येक प्राणी की गतिविधि को सूक्ष्मता के साथ देखता है। उसकी आँख से कुछ भी नहीं छिपता। अपनी विवेक–चक्षु से साधु और असाधु की पहचान कर लेता है। साधुओं को सत्कर्म में प्रोत्साहित करता है। जो व्रतहीन हैं, किसी भी शुभ–कर्म के संकल्प से रहित हैं, अतएव जो दुर्वृत्त, अप्रिय और असेव्य हैं, उन्हें दुर्गति के अन्धकूप में धकेलता है, दण्डित करता है। आओ, हम 'पवमान सोम' को अपने जीवन की पतवार सौंपकर मन, वचन और कर्म से पवित्र बनें।

❑

वेद मंजरी स

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

मानव जीवन गाथा

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में चर्चा हो रही थी कि आत्मदर्शन के लिए पाँचवी आवश्यक बात दोषों को समाप्त करना है। मनुष्य का अन्त:करण प्राय: तीन दोषों को साथ लिए रहता है–मूल, विशेष और अवशेष। ये तीनों जब तक दूर न हों, तब तक आत्मा के दर्शन नहीं होते। आत्मदर्शन का वास्तविक अर्थ है ईश्वर दर्शन। इसके लिए सबसे आवश्यक बात है ईश्वर–भक्ति की वह भावना जो मनुष्य को इस मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। धर्म, अर्थ, काम और अन्त में मोक्ष–दन सबको पाने का परम साधन भक्ति है।

प्रेम की भावना से, अपनेपन की भावना से, अन्य वस्तुओं की अभिलाषा छोड़कर अपने–आप को ईश्वर के प्रति अर्पण कर देना ही भक्ति है। इस विचार से प्रत्येक कार्य को करो कि उसे ईश्वर के अपर्ण कर देना है। कोई भी ऐसा कार्य मत करो जिसे तुम ईश्वर के अर्पण करते समय लज्जा के कारण पृथिवी में गड़ जाओ।

––अब आगे

देखिये, आपको एक रहस्य की बात बताता हूँ। मन का मैल दूर करने और आत्मा को परमात्मा के निकट ले–जाने का एक बहुत उत्तम मार्ग है–दु:खियों की सेवा। आर्य समाज ने इस मार्ग को दीर्घ समय तक अपनाये रखा। जहाँ कोई भी दु:ख होता वहाँ आर्य समाज के सेवक पहुँच जाते। कहीं भूकम्प आये, अकाल पड़े अथवा महामारी हो, आर्य समाज आगे बढ़कर दु:खियों और आर्त्त लोगों की सहायता करने लगता था। बिहार में भूकम्प आया तो पूज्य महात्मा हंसराज जी ने आर्य समाज के दूसरे सेवकों के साथ मुझे भी वहाँ भेज दिया। मुँगेर में पहुँचे। हम लोगों को वहाँ पता लगा कि मध्याह्न ढाई बजे के लगभग भूकम्प आया था। बाज़ार उस समय ग्राहकों से भरे थे। दुकानदार दुकानों में बैठे थे, तभी पृथिवी काँप उठी। लोगों ने भयभीत होकर इधर–उधर देखा, परन्तु इससे पूर्व कि उनका आश्चर्य समाप्त होता, पृथिवी पुन: काँप उठी। उसके भीतर सहस्त्रों तोपों के एक–साथ गरजने की ध्वनि गूँज उठी। क्षणभर में कितनी ही दुकानें मलबे का ढेर बन गईं। दुकानदार उस समय मलबे के ढेर में दब गये, ग्राहक दब गये। जो लोग बचे, वे आगे दौड़े तो और अधिक मकानों तथा दुकानों ने गिरकर बाज़ार समाप्त कर दिये। जो लोग बाज़ारों से परे थे, वे भी डर के कारण भागे, किन्तु पृथिवी फट गई। कितने ही व्यक्ति उसकी दरारों में जा गिरे। हाहाकार जाग उठा हर ओर। पृथिवी से निकली हुई गैस ने कितने ही लोगों को बेहोश कर दिया। धुआँ फैल गया प्रत्येक स्थान पर। सारा नगर मलबे का ढेर बन गया। मुंगेर में हम पहुँचे। धुआँ और गैस समाप्त हो चुके थे। बहुत–सी दरारें बन्द हो गई थीं। पृथिवी कुछ शान्त हो चुकी थी। जो लोग दबने से बच गये थे, उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं था, पीने को कुछ नहीं था, पहनने को कुछ नहीं था। उनकी सहायता का कार्य पूरा हुआ तो मलबे के नीचे से लाशें निकालने का कार्य आरम्भ हुआ। पहले दिन जहाँ लाशें मिलीं, वहाँ कुछ जीवित व्यक्ति भी मिले। दूसरे दिन भी कुछ जीवित व्यक्ति मिले। तीसरे दिन केवल चार व्यक्ति मिले, चौथे दिन क़ेवल दो, पाँचवें और छठे दिन केवल एक–एक। इसके पश्चात् लाशें ही लाशें निकलने लगीं। पन्द्रहवें दिन तक लाशों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं मिला। परन्तु सोलहवें दिन एक दुकान का मलबा हटाया जा रहा था कि मलबे के नीचे से किसी के साँस लेने की ध्वनि सुनाई दी। हम लोग अधिक सावधानी से मलबा हटाने लगे। बेलचों व कुदालों के स्थान पर हाथों से मिट्टी के ढेर को परे करने लगे। कुछ ही देर के पश्चात् एक छिद्र–सा हुआ। उसके भीतर प्रकाश के द्वारा देखा गया तो ज्ञात हुआ कि अन्दर कोई हिल रहा है। तब तीव्रता से मलबे को हटाया गया तो हम लोग यह देखकर आश्चर्यचकित रह गये कि नीचे एक व्यक्ति बैठा है। उसे जीवित देखकर जो प्रसन्नता हुई वह वर्णन नहीं की जा सकती। ऐसा प्रतीत हुआ कि आत्मा में एक ज्योति *जाग* उठी है, सच्चा आनन्द जाग्रत हो गया है। इसी समय यह भी ज्ञात हुआ–

जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय।
बाल न बाँका कर सके, जो जग बैरी होय।।

मैंने उस व्यक्ति से पूछा कि इतने दिन तक बिना खाये–पीये इस लाखों मन मलबे के नीचे तुम जीवित कैसे रहे? उसने बताया कि भूकम्प आने से पूर्व वह अपनी दुकान में बैठा था। केले की दुकान थी उसकी। कितने ही केले दुकान में पड़े थे। भूकम्प आया तो छत

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

हिन्दू संगठन की समस्याएँ और स्वामी श्रद्धानन्द

● डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

स्वामी जी के जीवन का अन्तिम अध्याय शुद्धि, संगठन और अछूतोद्धार का अध्याय है। स्वामी जी शुद्धि के साथ-साथ हिन्दू-संगठन के महत्व को समझते थे। वस्तुतः शुद्धि की सफलता हिन्दुओं के संगठन के सुदृढ़ हुए बिना नहीं हो सकती। हिन्दुओं के संख्यागत ह्रास की ओर उनका ध्यान 1912 ई. में कर्नल यू. मुखर्जी ने उस समय आकर्षित किया, जब वे कलकत्ता गए थे। उन्होंने स्वामी जी को बताया कि यदि भारत में हिन्दुओं की जनसंख्या इसी रफ्तार से कम होती गई तो आने वाले 420 वर्षों में इस धरती पर से हिन्दू-जाति का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। प्रख्यात समाजवादी चिन्तक श्री मधु लिमये ने भी स्वामी जी की इस चिन्तन-सरणि से अपनी सहमति व्यक्त की है। स्वामी जी की दृष्टि इस ओर जीवन के सान्ध्य काल में इसलिए भी गई कि महात्मा गाँधी की मुस्लिम-तुष्टिकरण की नीति का कांग्रेस के पास कोई तार्किक जवाब नहीं था। स्वामी जी ने विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार रूपी गाँधी जी के आह्वान को स्वीकार किया। किन्तु उन वस्त्रों की होली जलाने की अपेक्षा वे देश के दरिद्रनारायणों में उसे वितरित किए जाने के पक्षधर थे। स्वामी जी को घोर आश्चर्य और दुःख तब हुआ जब उन्हें विदित हुआ कि कांग्रेस के मुसलमान नेताओं ने गाँधी जी से इस बात की स्वीकृति ले ली कि विदेशी कपड़ों को तुर्की भेज दिया जाए, जहाँ रहने वाले मुस्लिम भाई इन कपड़ों का प्रयोग कर सकें। तब स्वामी जी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भारत के मुस्लिम नेताओं को अपने ही देश के दरिद्र लोगों की अपेक्षा अपने सम्प्रदाय के तुर्की मुसलमानों से अधिक लगाव है।

अछूतों की समस्या का समाधान करने में कांग्रेस ने जिस उपेक्षा तथा उदासीनता का परिचय दिया इससे भी स्वामी जी दुःखी थे। एकतरफ दलितों के प्रति सवर्ण जातियों का सदियों से आ रहा भेदभावपूर्ण व्यवहार, दूसरे स्वतन्त्रता की लड़ाई में कांग्रेस की दलितों की प्रति इस उपेक्षावृत्ति ने स्वामी जी को उद्विग्न कर दिया। कांग्रेस को जब अस्पृश्यता की समस्या के प्रति स्वामी जी ने सावधान किया तो जून 1922 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की लखनऊ में सम्पन्न हुई बैठक में उसके लिए एक उपसमिति बनाने का निश्चय हुआ और स्वामी जी को ही उसका संयोजक बनाया गया। इसके लिए कुछ धनराशि निश्चित की गई, किन्तु आगे चलकर उस अल्प-सी धनराशि में भी कटौती कर दी गई। जब स्वामी जी ने अस्पृश्यता-निवारण के लिए कतिपय चुनौतियों को संजीदगी से लेकर समाधान का मार्ग सुझाते हुए एक योजना बनाकर उसे पूरा करना चाहा, तो कांग्रेस ने इस उपसमिति को दी जाने वाली सहायता राशि ही कम नहीं की अपितु संयोजक के पद पर स्वामी जी को हटाकर एक अन्य व्यक्ति को नियुक्त कर दिया। हिन्दु-समाज के सबसे दुर्बल वर्ग (दलितों) की समस्याओं से कांग्रेस का कन्नी काटना स्वामी जी के लिए असह्य था फलतः स्वामी जी ने कांग्रेस से किनारा करने का कठोर निर्णय ले लिया। कालान्तर में जब डॉ. अम्बेडकर ने कांग्रेस की इस कदम की कठोर आलोचना की और इसके लिए गाँधी जी तक को कठघरे में खड़ा कर दिया, तब किसी के पास इसका कोई उत्तर नहीं था। दलितों के नेता डॉ. अम्बेडकर ने दलितोत्थान के क्षेत्र में स्वामी जी के कार्यों और उनके इरादों के प्रति पूरी-पूरी सहमति व्यक्त की है।

मुस्लिम साम्प्रदायिकता—दूसरी तरफ ख़िलाफत के नेताओं का राष्ट्र-विराधी चरित्र धीरे-धीरे सामने आने लगा। कमालपाशा के नेतृत्व में वैचारिक क्रान्ति जब तुर्की में हो गई तब वहाँ ख़िलाफत की पुनः स्थापना की कोई गुञ्जाइश ही नहीं रही। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत के मुस्लिम नेताओं का धैर्य समाप्त हो गया। वे ब्रिटिश सरकार का तो कुछ बिगाड़ नहीं सकते थे, अतः अपना सारा आक्रोश असंगठित हिन्दुओं पर उतारने लगे और जगह-जगह हिन्दू-मुस्लिम दंगे प्रारम्भ हो गए। शायद ही कोई दंगा हिन्दुओं ने शुरू किया हो, सभी जगह मुस्लिमों ने दंगे प्रारम्भ कर दिए। मुस्लिम दंगाई यहीं तक नहीं रुके, उनके मौलानाओं ने नागपुर की ख़िलाफत कान्फ्रेंस में कुरान की वे आयतें पढ़ीं, जिनमें काफिरों को मारने के लिए कहा गया है। गाँधी जी के नजदीकी अली भाइयों की साम्प्रदायिक-नीति का भी पर्दाफाश हो गया। इन सबका दुःखद परिणाम यह हुआ कि मलाबार प्रान्त में मुसलमान मोपलाओं ने वहाँ की हिन्दू जनता पर कहर ढ़ा दिए। उन पर अमानुषिक अत्याचार किये गए। हजारों कत्ल हुए और बहन-बेटियों की इज्जत से भी खेला गया। काँग्रेस ने इसके प्रतिकार के लिए कुछ नहीं किया, सिवाय अहमदाबाद में कांग्रेस ने धीमे स्वर में निन्दा करने के।

इन सारी स्थितियों को देखकर स्वामी श्रद्धानन्द जी इस परिणाम पर पहुँचे कि प्राचीन हिन्दू जाति का एक प्रबल संगठन हो, जिसमें सबसे ज्यादा ध्यान उन दलित-भाइयों के प्रति दिया जाए, जिन्हें हजारों वर्षों से पद-दलित किया गया है। स्वामी जी ने इस अवसर पर एक 'प्रेस वक्तव्य' में स्पष्टता से कहा कि-**"इसका एक कारण यह प्रतीत होता है कि एक ओर जहाँ मुसलमान और सिख जैसी जातियाँ सामाजिक तौर पर संगठित हैं, वहाँ हिन्दू-समाज का ढाँचा जीर्ण-शीर्ण और चरमराया हुआ है।"**

इसी कारण स्वामी जी ने अपने अन्तिम समय में हिन्दू-संगठन और अछूतोद्धार पर अधिक बल दिया।

धर्मान्तरण की समस्या—स्वामी जी इस बात को नहीं मानते थे कि हिन्दुओं के संगठित होने से उनका मुसलमानों से टकराव होगा अथवा साम्प्रदायिक वैमनस्य को बढ़ावा मिलेगा। यदि मुस्लिम, ईसाई आदि ऐसा सोचते हैं तो यह उनकी असहिष्णुता है। जब विश्वस्तरीय मुस्लिम बिरादराना है और चर्च दुनिया भर के इसाइयों की फिक्र करते हैं तो यह कहाँ का न्याय है कि प्राचीन हिन्दू जाति अपना अस्तित्व इस देश में बचाए रखने के लिए संगठनात्मक स्तर पर प्रयास भी न करे। सच्चाई यह है कि सशक्त हिन्दू-समाज ही समान धरातल पर साम्प्रदायिक राजनीति से निपटने में सक्षम हो सकता है। और अन्यों की राष्ट्र विरोधी गतिविधियों पर अंकुश लगा सकता है। स्वामी जी के समक्ष हिन्दू-संगठन के दो पहलू थे-(1) नौमुस्लिमों को पुनः हिन्दू समाज में शुद्ध कर प्रविष्ट कराना, (2) दलित जातियों को सामाजिक स्तर पर ऊँचा उठाना, जिससे वे अपने सवर्ण हिन्दू-भाइयों जैसे हो सकें। सामाजिक उच्चावचता का आधार ज्ञान-कर्म और चरित्र ही हो, न कि जन्मगत जातिवाद।

हिन्दू-समाज की अछूत या दलित समस्या का स्वामी जी ने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भी विचार किया था और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि मुसलमानी शासनकाल में जिन लोगों ने अपने परम्परागत धर्म को छोड़कर इस्लाम को स्वीकार किया था, उनमें से अधिकांश वे ही थे जिनका जन्म हिन्दुओं की इन्हीं निम्न जातियों में हुआ था साथ-साथ वे निरंकुश शासकों के अमानवीय अत्याचारों से भी पीड़ित थे। अपने आपको इस विषम परिस्थिति से उबारने का उन्हें धर्मपरिवर्तन ही एक मात्र उपाय दिखाई पड़ा। धर्म परिवर्तन के बाद भी एक कुँजड़ा या कसाई किसी सैयद की बेटी से या कोई जुलाहा या घसियारा अपनी लड़की का निकाह किसी शेख के बेटे से करने की सोच भी नहीं सकता था। किन्तु उन्हें यह सकून देता था कि बादशाह और गुलाम का मजहबी हक बराबर है, जिस फर्श पर खड़ा होकर सुलतान खुदा की इबादत कर सकता है, उसी जगह एक गुलाम को भी खड़ा होकर नमाज पढ़ने का हक इस्लाम ने दे रखा है। साथ ही सवर्ण हिन्दुओं की ओर से निरन्तर लांछना, तिरस्कार और अपमान से निजात मिल पाने की ख्वाहिश भी जरूर थी, जो उन्हें बहुत हद तक मिल सकी।

उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय नवजागरण के आन्दोलन के सूत्रधार स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, बंगाल में ब्राह्मसमाज के संस्थापक राजा राममोहन राय (क्योंकि ब्राह्मसमाज का सीमित प्रभाव भी बंगाल तक ही सीमित रहा), प्रार्थना समाज, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, डॉ. लोहिया, श्री ज्योतिबा फुले, डॉ. अम्बेडकर आदि मनीषियों तथा आर्यसमाज जैसी सुधारवादी सामाजिक संस्थाओं द्वारा पिछले सौ-सवासौ वर्षों से किए जा रहे आन्दोलनों और कार्यों का परिणाम अभी इतना ही हुआ है कि छूआछूत की भावना न के बराबर रह गई है। हरिजनों या दलितों का मन्दिर प्रवेश अब कोई बड़ी समस्या नहीं है, निर्धनता में भी कमी आई है। अन्तर्जातीय-विवाहों का कुछ-कुछ प्रचलन होने लगा है। किसी ईसाई या मुसलमान का अपने घर-वापसी या शुद्धि का कट्टरपंथी हिन्दू सवर्णों या ब्राह्मणों द्वारा अब कोई विरोध नहीं होता। पुनरपि हिन्दू-संगठन की दृष्टि से कतिपय समस्याएँ इस प्रकार हैं-

(1) हिन्दू समाज में बाबाओं, गुरुओं, भगवानों या धर्माचार्यों की बाढ़ आई हुई है। इन धर्माधिकारियों के पास अरबों-खरबों की सम्पत्ति इकट्ठी हो गई है। इन्होंने हिन्दू-समाज के एक बड़े भाग को अपने पाखण्डों में फँसा कर उनका धार्मिक और आर्थिक शोषण करके उन्हें खण्ड-खण्ड कर विभाजित कर रखा है। एकता के मार्ग में ये गुरुडम के आढ़ती सबसे बड़े बाधक हैं। इनका ऐशो-आरामपूर्ण विलासिता का जीवन हिन्दू-समाज के लिए सबसे बड़ी समस्या है। ईसाई या मुसलमानों के किसी धर्मप्रचारक के पास न तो ऐसी जीवनशैली है और न उनकी सोच अपने अनुयायियों की जातीय चेतना के विरुद्ध है। आशारामबापू, रामपालदास और साईं बाबा के ट्रस्ट इसके बानगी भर हैं। जब तक हिन्दू समाज के बड़े भाग पर इन बाबाओं, गुरुओं, ढोंगियों, पाखण्डी धर्माचार्यों का आतङ्क रहेगा तब तक हिन्दुओं का कोई संगठन कारगर न हो सकेगा। हिन्दू-धर्म के इन ठेकेदारों के विरुद्ध इस समय देश में आर्य समाज के अतिरिक्त कोई संस्था नहीं है जो इसका पर्दाफाश कर सके। आज हिन्दुओं के समक्ष यह सबसे बड़ी चुनौती है।

(2) हिन्दू-समाज में इस समय तीन सबसे बड़े धड़े बन गए हैं, जिनका आधार हिन्दुओं की जाति-व्यवस्था है। ये तीन धड़े हैं-(क) सवर्ण हिन्दू, (ख) पिछड़ी जातियाँ, (ग) अनुसूचित जाति या दलित समाज। अनुसूचित जनजातियों या वनवासी-आदिवासियों को भी दलित वर्ग के अन्तर्गत समझना चाहिए। हिन्दुओं के इन तीन वर्गों का संघर्ष राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र में गाँव से शहर तक दिखाई पड़ता है। इसका एक बड़ा कारण **आरक्षण** भी है। **आरक्षण का समर्थन या विरोध दोनों ही स्थितियाँ समस्यामूलक**

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

www.thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 03 का शेष

हिन्दू संगठन की...

हैं। स्वामी श्रद्धानन्दजी द्वारा निर्दिष्ट शैक्षिक वातावरण और समान धरातल प्रदान करने के अतिरिक्त अन्य कोई समाधान दिखाई नहीं पड़ता। सरकार की ओर से आरक्षण का लाभ अन्तर्जातीय विवाह करने वाले युवक–युवतियों को ही मिलना चाहिए, जिससे जाति–प्रथा टूट सके या कमजोर हो जाए।

(3)हिन्दू–समाजमेंप्रचलितजाति–पाति के आधार पर वैवाहिक–व्यवस्था को समाप्त किए बिना हिन्दुओं का संगठन प्रभावी नहीं हो सकता। युवक–युवतियों के अभिभावकों द्वारा वैवाहिक–सम्बन्धों में कम से कम 50 (पचास) प्रतिशत अन्तर्जातीय विवाह किए बिना हिन्दुओं की सामाजिक तथा जातीय चेतना जागृत नहीं हो सकेगी।

ऋषि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द का क्रान्तिकारी चिन्तन ही इन समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। हिन्दुओं में प्रचलित जाति–प्रथा के टूट जाने पर ही ईसाइयों और मुसलमानों की बड़ी संख्या में अपने पुराने घर में वापसी हो सकेगी, तब बेटे–बेटियों का वैवाहिक–सम्बन्ध समस्या नहीं रह जायेगी। क्योंकि मुस्लिम या ईसाई जब शुद्धि द्वारा अपने प्राचीन धर्म में परिवर्तित होंगे तब जातीय पहचान देने और लेने की समस्या नहीं होगी। मोटे तौर पर कार्य या कर्म के आधार तथा अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति के अनुसार उनका वैवाहिक सम्बन्ध अपने समानधर्मा हिन्दुओं में से हो सकेगा।

"अग्निर्ज्योति" चाणक्यपुरी
अमेठी उ.प्र.–227405
दूर. 05368–212007
मो. 09415185521

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्यस्मृति में

● गंगा प्रसाद उपाध्याय

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धया कृतयज्ञेन श्रद्धानन्दो भवेश्वरः।।

यों तो आर्यसमाज किसी समय भी श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी को भुला नहीं सकता, परंतु 1946 ई० का दिसम्बर मास विशेष रूप से स्वामी जी की याद दिलाता है। पूर्वी बंगाल की विपत्ति, नोआखाली का हत्याकाण्ड आदि कई घटनाएँ हैं जो रह–रहकर स्वामी जी की याद दिलाती हैं। स्वामी जी महाराज का जीवन इस समय हमको कितना सहारा देता इसका अनुमान लगाना कठिन है। परंतु महापुरुषों की स्मृति का एकमात्र उपयोग यह है कि हम अपने जीवन को उस स्मृति से प्रभावित करें–

Lives of great men all remind us,
We can make our lives sublime,
And departing, leave behind us,
Footprints on the sands of time,
Footprints–that perhaps another,
Sailing o'r life's solemn main,
A forlorn and ship-wrecked brother,
Seeing, shall take, heart again.

(Longfellow)

संस्कृतानुवाद–

नः स्मारयन्ति त्विह जीवनानि शुभानि सर्वाणि महाजनानाम्।
स्वजीवनं साधयितुं समर्था वयं तथा स्मश्च यथा त आसन्।।
अस्मासु मृत्योश्च मुखं गतेषु त्यजेम चिह्नानि पदाङ्कितानि।
आगन्तुकानां सुसहायतार्थं रेणौ तटे कालमहोदधेश्च।।
इमानि चिह्नानि विलोक्य येन गंभीरसंसार – समुद्र – यात्री।
दुर्भाग्य – वीच्याहत भग्नपोतः समुत्सहेतैक हताशबन्धुः।।

भावार्थ यह है कि महापुरुषों के जीवन हमें इस बात का स्मरण कराते हैं कि हम भी अपने जीवन को उन्नत कर सकते हैं और इस संसार से प्रेरणा करते हुए ऐसे चिह्न कालरूपी समुद्र की रेत पर छोड़कर जा सकते हैं जिनको देखकर निराश व्यक्तियों के अन्दर भी आशा का संचार हो जाए।

आर्य जाति इस समय संकट में है, इसका जहाज टूटा पड़ा है। चारों ओर से समुद्र में तूफान उठ रहा है। ऐसे समय स्वामी श्रद्धानन्द की पुण्यस्मृति से ही हम अपनी उन्नति के पथ पर चलने में सहायता ले सकते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्यसमाज के लिए क्या किया? यह प्रश्न नहीं। प्रश्न तो यह है कि उन्होंने क्या नहीं किया? संगठन, साहित्य और संस्था तीनों विभागों में उनकी बुद्धि और उनके परिश्रम के चमत्कार दिखाई पड़ते हैं। परंतु इस समय हम एक ही बात की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करेंगे।

मैं इस समय 'बलिदान भवन' में बैठा हुआ हूँ और बलिदान की बात ही सोच रहा हूँ। सार्वदेशिक सभा के जन्म में पूज्य स्वामी जी का विशेष हाथ था और इसकी उन्नति में वे सदा यत्न करते रहे। यहीं इनका प्राणान्त हुआ। अतः सार्वदेशिक सभा पर उनकी अन्तिम छाप है।

जब सार्वदेशिक सभा खोली गई थी इस समय आर्यसमाजों को और विशेषकर शक्तिशाली आर्यसमाजों को इसकी कुछ अधिक परवाह नहीं थी। हरएक समाज समझता था कि काम तो चल ही रहा है। परंतु दूरदर्शी लोग जानते थे कि जिस समाज में संगठन नहीं वह चाहे कितना प्रबल क्यों न हो, तूफान के झोंकों को सहन नहीं कर सकता। समाज का ज्यों–ज्यों काम बढ़ा, उसकी कठिनाइयाँ भी बढ़ीं और आवश्यकता प्रतीत हुई कि समस्त आर्यसमाज–जगत् को मिलकर काम करने चाहिएँ। हमारी सब शक्तियाँ केन्द्रीभूत होनी चाहिएँ। हैदराबाद (दक्षिण) के सत्याग्रह ने दोपहर के सूर्य के समान स्पष्ट कर दिया कि केन्द्रीय शक्ति में कितना प्रभाव है। उस समय यदि सार्वदेशिक सभा न होती तो हमको कभी सफलता प्राप्त न हो सकती। सिन्ध और सत्यार्थप्रकाश आंदोलन के सम्बन्ध में भी यही बात ठीक जँचती है। इसलिए आवश्यकता है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्यस्मृति को इस प्रकार से मनावें कि समस्त आर्यजगत् की सामूहिक शक्ति एक स्थान पर केन्द्रित हो सके।

सार्वदेशिक सभा के क्षेत्र बहुत विस्तृत हैं। इसको इस भूमण्डल पर कार्य करना है जिसकी परिधि 25000 मील और जिसका व्यास 8000 मील से ऊपर है। आर्यसमाज के क्षेत्र में न केवल सूर्यास्त नहीं होता अपितु सदा मध्याह्न रहता है। इतनी विशाल संस्था की शक्ति और समर्थता कितनी विशाल होनी चाहिए।

इसमें सन्देह नहीं कि सार्वदेशिक सभा की लोकप्रियता बढ़ रही है। अभी हमने नोआखाली के लिए अपील की है और प्रायः सभी आर्यसमाज और भाई अपनी शक्ति के अनुसार धन भेज रहे हैं। उन्हीं के सहारे सभा ने पूर्वी बंगाल में अपने सहायता के क्षेत्र खोले हैं और आर्य जनता को यह सुनकर प्रसन्नता होगी कि उनके काम को लोग प्रशंसा की दृष्टि से देख रहे हैं। परंतु हमको केवल विपत्ति के समय ही तो काम नहीं करना। हमारा अधिक उपयोगी काम तो शांति के समय होना चाहिए। बाह्य आक्रमणों से बचाने के अतिरिक्त हमारा मुख्य काम यह है कि हमारी आन्तरिक शक्ति बढ़े और हमारे काम में नैरन्तर्य हो। मैं देखता हूँ कि इसमें बहुत बड़ी कमी है। सभा के साधन बहुत ही संकुचित हैं। मैं यहाँ दो–एक बातें लिखता हूँ–

(1) आजकल बिना एक अखबार के अपनी आवाज़ जनता तक नहीं पहुँचाई जा सकती। कांग्रेस की ओर देखो! इसके कितने पत्र हैं जो कांग्रेस की नीति को प्रतिदिन प्रातःकाल संसारभर में फैला देते हैं। क्या आर्यसमाज का कोई एक भी ऐसा पत्र है? यह ठीक है कि पत्र निकालने में पैसा लगता है, परन्तु पत्र के बिना काम कितना अधूरा रहता है! हमको दूसरों के मुखों से बोलना पड़ता है और वे नहीं चाहते कि वे हमारी आज्ञा पर अपना मुँह खोला करें। उनको क्या गरज पड़ी? हम गूँगे हैं। हमारा गूँगापन दूर होना चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के पास एक बढ़िया प्रेस और एक श्रेष्ठ अखबार होना चाहिए। केवल भारतवर्ष में ही 50 लाख आर्य और 2000 से अधिक आर्यसमाजें हैं। यदि 50 लाख के चौथाई अर्थात् 12 लाख आर्य चार–चार आने इस काम के लिए दें तो प्रेस और पत्र दोनों चल सकते हैं।

(2) सभा के पास एक अच्छा प्रकाशन–विभाग होना चाहिए जिसमें सब प्रसिद्ध भाषाओं का साहित्य होना चाहिए। इसे व्यापारिक ढंग पर चलाया जाए जिससे प्रचार में कठिनाई न हो। एक लाख की पूँजी से यह काम आरम्भ किया जा सकता है। परन्तु इसके लिए एक ऐसे अनुभवी सज्जन की आवश्यकता होगी जिसको व्यापार और साहित्य दोनों से प्रेम हो। आर्यसमाज में साहित्यकारों का अभाव नहीं है। अभाव है उन साधनों का जिनसे साहित्य में वृद्धि हो सकती है।

(3) तीसरी चीज है संगठन। आर्यसमाजियों को पाश्चात्य लड़ाई–झगड़ों को देखकर यह विश्वास हो गया है कि लड़ाई–झगड़े उन्नति के चिह्न और उन्नति के साधन हैं। अतः हममें से जो शक्तिशाली हैं वे संगठन को ढीला करने में अपनी शान समझते हैं। इससे जन, धन और शक्ति तीनों का ह्रास होता है। परन्तु कठिनाई यह है कि यह तीसरी बात किससे कही जाए? जो मानने को तैयार हैं वे लड़ते नहीं और जो लड़ते हैं उनको हमारी बात सुनने का अवसर या अवकाश नहीं। फिर भी कुछ तो करना ही होगा।

यह तो मानना ही होगा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी अब आकर हमारी विपत्तियों को दूर नहीं कर सकते। अब वे हमारे मध्य में नहीं हैं। अब तो हमको केवल उनकी स्मृति से ही शिक्षा ग्रहण करनी है। स्मृति मनाने का यह अर्थ तो है नहीं कि हम हाय–हाय करें और ताज़ियों की तरह अपनी छाती पीटें। हमारा कर्त्तव्य तो यह है कि जो काम श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी को बहुत प्रिय था उसको बढ़ाने का यत्न करें।

'गंगा ज्ञान सागर'
पुस्तक से साभार

www.thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द : जिन्होंने 'मिस्टर गांधी' को 'महात्मा गांधी' बनाया

● डॉ. सुरेन्द्र कुमार

जिस समय श्री मोहनदास कर्मचन्द गांधी दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद, नस्लभेद और उपनिवेशवादी शोषण के विरुद्ध सामाजिक आन्दोलन कर रहे थे, उसी समयावधि में भारत में एक महात्मा अपना सर्वस्व त्याग कर विदेशी शिक्षा, अस्पृश्यता, असमानता, जातिवाद अशिक्षा, राजनीतिक पराधीनता, अन्धविश्वास, पाखण्ड आदि के विरुद्ध सामाजिक क्रान्ति कर रहे थे। उनका नाम था– महात्मा मुंशीराम (संन्यास नाम स्वामी श्रद्धानन्द) जो हरिद्वार के निकट कांगड़ी नामक गांव में गंगा तट पर स्वस्थापित 'गुरुकुल कांगड़ी' नामक शिक्षा संस्था के माध्यम से अपने उद्देश्यों की पूर्ति में संलग्न थे। दक्षिण अफ्रीका में श्री गांधी का नाम और काम सुर्खियों में था तो भारत में महात्मा मुंशीराम का। दोनों अपने–अपने देश में सामाजिक सुधार में संलग्न थे। किन्तु एक का दूसरे से साक्षात् परिचय नहीं था और न मेल–मिलाप हुआ था। दोनों महापुरुषों का परस्पर साक्षात् परिचय और मेल–मिलाप कराने में सेतु का कार्य किया श्री गांधी के मित्र प्रो. सी. एफ. एंड्रूज ने। प्रो. एंड्रूज सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली में शिक्षक थे और दोनों के सुधार–कार्य से प्रभावित थे। उन्होंने श्री गांधी को लिखे एक पत्र में परामर्श दिया था कि 'आप जब भी दक्षिण अफ्रीका से भारत आयें तो भारत के तीन सपूतों से अवश्य मिलें।' वे तीन व्यक्ति थे– महात्मा मुंशीराम, कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर और सेंट स्टीफेंस कॉलेज दिल्ली के प्रिंसिपल श्री सुशील रुद्र (यंग इंडिया 06.01.1927)। श्री गांधी महात्मा मुंशीराम के कार्यों को पढ़कर अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के फोनिक्स आश्रम नेटाल से दिनांक 21 अक्टूबर 1914 को एक पत्र लिखा जिसमें महात्मा मुंशीराम जी के कार्यों की प्रशंसा की और उनके प्रति श्रद्धाभाव से आत्मीयता व्यक्त करते हुए उनको 'महात्मा' एवं 'भारत का एक सपूत' लिखा तथा उनके चरणों में नमन करने हेतु मिलने के लिए अपनी अधीरता व्यक्त की। श्री गांधी द्वारा अंग्रेजी में लिखे उक्त पत्र की कुछ पंक्तियों का हिन्दी अनुवाद है – ''प्रिय महात्मा जी, ...मैं यह पत्र लिखते हुए अपने को गुरुकुल में बैठा हुआ समझता हूं। निस्सन्देह उन्होंने मुझे इन संस्थाओं (गुरुकुल कांगड़ी, शान्ति निकेतन, सेंट स्टीफेंस कॉलेज) को देखने के लिए अधीर बना दिया है और मैं उनके संचालकों भारत के तीनों सपूतों के प्रति अपना आदर व्यक्त करना चाहता हूं। आपका–मोहनदास गांधी''। उसके पश्चात् दिनांक 8 फरवरी 1915 को पूना से हिन्दी भाषा में लिखे एक पत्र में श्री गांधी ने फिर लिखा– ''महात्मा जी, ...आपके चरणों में सिर झुकाने की मेरी उमेद है। इसलिए बिन आमन्त्रण आने की भी मेरी फरज समझता हूं। मैं बोलपुर से पीछे फिरूं उस बाबत आपकी सेवा में हाजर होने की मुराद रखता हूं। आपका सेवक– मोहनदास गांधी'' (दोनों पत्रों की मूल प्रतियां गांधी संग्रहालय, दिल्ली में उपलब्ध हैं)

कुम्भपर्व के अवसर पर अपनी पत्नी कस्तूर बा के साथ यात्रा– कार्यक्रम बनाकर श्री गांधी एक सामान्य कार्यकर्ता की तरह 5 अप्रैल 1915 को हरिद्वार पहुंचे। छह अप्रैल को उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी में पहुंचकर उसके संस्थापक महात्मा मुंशीराम से भेंटकर उनके चरणों में झुक कर प्रणाम किया। आठ अप्रैल को गुरुकुल की कनखल स्थित– मायापुर वाटिका में गांधी जी का सम्मान किया गया और एक अभिनन्दन पत्र भेंट किया जिसमें उनको 'महात्मा' की उपाधि से विभूषित किया। वक्ताओं ने भी स्वागत करते हुए कहा कि 'आज दो महात्मा हमारे मध्य विराजमान हैं।' महात्मा मुंशीराम ने अपने सम्बोधन में आशा व्यक्त की कि अब महात्मा गांधी भारत में रहेंगे और ''भारत के लिए ज्योति स्तम्भ बन जायेंगे।'' महात्मा गांधी ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि 'मैं महात्मा मुंशीराम से मिलने के उद्देश्य से ही हरिद्वार आया हूं। उन्होंने पत्रों में मुझे ''भाई'' कहा है, इसका मुझे गर्व है। कृपया आप लोग यही प्रार्थना करें कि मैं उनका भाई बनने के योग्य हो सकूं। अब मैं विदेश नहीं जाऊंगा। मेरे एक भाई (लक्ष्मीदास गांधी) चल बसे हैं। मैं चाहता हूं कोई मेरा मार्गदर्शन करे। मुझे आशा है कि महात्मा मुंशीराम जी उनका स्थान ले लेंगे और मुझे 'भाई' मानेंगे।'' (सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय एवं हिन्दू 12.04.1915 अंक)

इस भेंट ने दो समाज सुधारकों को 'घनिष्ठ मित्र' और 'एक–दूसरे का भाई' बना दिया। गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में इस अवसर पर दोनों महात्माओं के मेल से भारत में सामाजिक सुधार और राजनीतिक स्वाधीनता का एक नया अध्याय आरम्भ हुआ जिसका सुखद परिणाम भारत की स्वतन्त्रता और शैक्षिक जागरूकता के रूप में सामने आया। गुरुकुल कांगड़ी के उक्त सार्वजनिक अभिनन्दन में श्री गांधी को 'महात्मा' की उपाधि प्रदान करने के पश्चात् महात्मा मुंशीराम ने अपने पत्रों और लेखों में सर्वत्र उनको 'महात्मा गांधी' के नाम से सम्बोधित किया। परिणामस्वरूप जन समुदाय में उनके लिए 'महात्मा' प्रयोग प्रचलित हो गया जो सदा–सर्वदा के लिए गांधी जी की विश्वविख्यात पहचान बन गया। उससे पूर्व दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेज़ी सभ्यता के अनुसार उनको 'मिस्टर गांधी' कहा जाता था। इस प्रकार 'मिस्टर गांधी' गुरुकुल कांगड़ी आकर 'महात्मा गांधी' बनकर निकले।

इस भेंट के बाद श्री गांधी और महात्मा मुंशीराम के सम्बन्धों में निकटता बढ़ती गई। उक्त प्रथम आगमन के अतिरिक्त गांधी जी फिर तीन बार गुरुकुल कांगड़ी में पधारे। दूसरी बार 18, 20 मार्च 1916 को आये और गुरुकुल के अछूतोद्धार सम्मेलन तथा वार्षिक उत्सव में भाषण किया था। तीसरी बार 18–20 मार्च 1927 को गुरुकुल के दीक्षान्त समारोह में उपस्थित होकर वक्तव्य दिया। चौथी बार 21 जून 1947 को गुरुकुल में पधारकर गुरुकुल वासियों को आशीर्वाद देकर गये। गुरुकुल कांगड़ी में चार बार आने का महात्मा गांधी का यह एक रिकॉर्ड है, क्योंकि इतनी बार वे भारत की किसी अन्य शिक्षा संस्था में नहीं गये। उनका मानना था कि ''गुरुकुल कांगड़ी तो गुरुकुलों का पिता है। मैं वहां कई बार गया हूं। स्वामी जी के साथ मेरा सम्बन्ध बहुत पुराना है।'' (महादेव भाई की डायरी, खण्ड 7)

ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी के अभाव में या अन्य कारणों से कुछ लेखकों ने यह धारणा फैला दी है कि 'श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ने प्रथम बार श्री गांधी को पहले से ही 'महात्मा' कहकर पुकारा था।' यह विचार बाद में प्रचलित किया गया है जो अनुमान पर आधारित कल्पना मात्र है। इसका कोई लिखित ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है। इस सम्बन्ध में कुछ तथ्यों पर चिन्तन किया जाना आवश्यक है–

'महात्मा' शब्द का प्रयोग श्री गांधी और महात्मा मुंशीराम के पारस्परिक लेखन और व्यवहार में प्रचलित था, श्री टैगोर के साथ नहीं। गांधी जी मुंशीराम जी को महात्मा लिखते और कहते थे प्रत्युत्तर में गांधी जी से प्रभावित महात्मा मुंशीराम ने भी सम्मान देने के लिए गांधी जी को 'महात्मा' कहा। यह स्वाभाविक ही है।

यदि थोड़ी देर के लिए यह मान भी लिया जाये कि श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ने सर्वप्रथम श्री गांधी के लिए 'महात्मा' शब्द का प्रयोग किया। यदि ऐसा हुआ भी होगा तो वह व्यक्तिगत और एकान्तिक रहा होगा, सार्वजनिक रूप में प्रयोग और लेखन कविवर टैगोर की ओर से नहीं हुआ तथा न वह सार्वजनिक रूप में हुआ और न उनकी भेंट के बाद वह जनसामान्य में प्रचलित हुआ। यह प्रयोग सर्वप्रथम सार्वजनिक रूप में महात्मा मुंशीराम की ओर से गुरुकुल कांगड़ी से आरम्भ हुआ। उसके पश्चात् ही जन–सामान्य में गांधी जी के लिए 'महात्मा' प्रयोग का प्रचलन हुआ।

केन्द्रीय सरकार के अभिलेखों में इसी तथ्य को स्वीकार किया गया है कि श्री गांधी को सर्वप्रथम गुरुकुल कांगड़ी में 'महात्मा' की उपाधि से विभूषित किया गया। 30 मार्च 1970 को स्वामी श्रद्धानन्द (पूर्वनाम महात्मा मुंशीराम) की स्मृति में भारतीय डाक तार विभाग द्वारा डाक टिकट जारी किया गया था। विभाग द्वारा प्रकाशित डाक टिकट के परिचय–विवरण में निम्नलिखित उल्लेख मिलता है– ''उन्होंने (स्वामी श्रद्धानन्द ने) कांगड़ी हरिद्वार में वैदिक ऋषियों के आदर्शों के अनुरूप एक बेजोड़ विद्या केन्द्र गुरुकुल की स्थापना की।.......... महात्मा गांधी जब दक्षिण अफ्रीका में थे तो सर्वप्रथम इसी संस्थान ने उन्हें अपनी ओर आकृष्ट किया और भारत लौटने पर वे सबसे पहले वहीं जाकर रहे। यहीं गांधी जी को 'महात्मा' की पदवी से विभूषित किया गया।''

उत्तर प्रदेश सरकार के सूचना विभाग द्वारा 1985 में प्रकाशित गांधीवादी लेखक श्री रामनाथ सुमन द्वारा लिखित 'उत्तर प्रदेश' नामक पुस्तक के 'सहारनपुर सन्दर्भ' शीर्षक में उल्लेख है कि 'हरिद्वार आगमन के समय गांधी जी को गुरुकुल कांगड़ी में महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने 'महात्मा' विशेषण से सम्बोधित किया था, तब से गांधी जी ''महात्मा गांधी'' कहलाने लगे।'

गांधी जी के गुरुकुल कांगड़ी आगमन के समय वहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों ने अपने संस्मरणों में, गुरुकुल के स्नातक इतिहासकारों ने अपने लेखों और पुस्तकों में श्री गांधी के सम्मान–समारोह का और उस अवसर पर उन्हें 'महात्मा' पदवी दिये जाने का वृत्तान्त दिया है। प्रसिद्ध पत्रकार श्री सत्यदेव विद्यालंकार ने लिखा है– ''आज गांधी जी जिस महात्मा शब्द से जगद्विख्यात हैं, उसका सर्वप्रथम प्रयोग आपके लिए गुरुकुल की ओर से दिए गए इस मानपत्र

शेष पृष्ठ 06 पर

www.thearyasamaj.org

श्रद्धामयोह्ययं पुरुषः (स्वामी श्रद्धानन्दः)

• डॉ. रघुवीर वेदालंकार

“श्रद्धामयोऽयं पुरुषः” यह शास्त्रीय वचन है किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द इसके मूर्तिमान् उदाहरण हैं। श्रद्धा के साथ सत्य भी अनिवार्य है। दोनों का तादात्मय है। इनमें से एक के बिना दूसरे का आस्तित्व नहीं है। सत्य के बिना श्रद्धा अन्धश्रद्धा होती है। श्रद्धा सत्य की प्रापक है। इसीलिए कहा गया है–'**श्रद्धया सत्यमाप्यते।**' स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन में ये दोनों गुण पूर्णरुप में अवतरित हो चुके थे।

स्वामी श्रद्धानन्द का नाम लेते ही हमारे सामने वीरता की, साहस की, सत्य की, श्रद्धा की, कर्मठता तथा ईश्वर भक्ति की एक ऐसी मूर्ति के चित्र सामने आने लगते हैं जिसे न मृत्यु का भय था तथा न ही संसार की किसी अन्य शक्ति का। वह मूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द की ही है। स्वामी जी सदैव सत्य के पुजारी रहे, श्रद्धा से ओत प्रोत रहे तथा निर्भयता–कर्मठता के प्रतीक रहे। उन्होंने अपना सारा जीवन परमेश्वर के आगे उसी प्रकार समर्पित कर दिया था जैसे नदी के प्रवाह में बहने वाला तिनका नदी को पूर्ण समर्पित हो जाता है। यही है योगदर्शन का ईश्वर प्रणिधान, जिसके विषय में व्यास जी कहते हैं–**तस्मिन् परमगुणै सर्वकर्मणां** अर्थात् उस परम गुरु परमात्मा में अपने सभी कामों का समर्पण कर देना। श्रद्धानन्द ने यही किया हुआ था तथा उनके गुरु महर्षि दयानन्द ने भी ऐसा ही कर रखा था। महर्षि दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द दोनो के जीवन पर दृष्टिपात करने से हमें अनेक समानताएँ नज़र आती हैं। महर्षि दयानन्द आमरण ब्रह्मचारी, योगिराज, परम वेदज्ञ परिव्राट् थे। उनसे स्वामी श्रद्धानन्द की तुलना तो नही हो सकती, तथापि इतना तो निश्चित है कि स्वामी श्रदानन्द ने महर्षि दयानन्द के अनेक गुणों को उसी प्रकार आत्मसात् कर लिया था जिस प्रकार लोहे का गोला अग्नि में पड़ कर अग्नि के गुणों को ले लेता है। महर्षि दयानन्द के शूर, वीरता, त्याग, तपस्या, सत्य, साहस, कर्मठता, निर्भीकता तथा ईश्वर, विश्वास आदि अनेक गुणों को स्वामी श्रद्धानन्द ने आत्मसात् कर लिया था।

स्वामी श्रद्धानन्द ने महर्षि के इन गुणों को इसलिए आत्मसात् किया, क्योंकि वे महर्षि के साक्षात् शिष्य थे। उन्होंने श्रद्धापूर्वक महर्षि के दर्शन किए थे तथा व्याख्यान सुने थे। महर्षि के साहस, वीरता, सत्य आदि गुणों को स्वामी जी ने उनके व्याख्यानों में देखा था तथा स्वयं महर्षि से वार्तालाप भी किया था। दोनों ही महापुरुष बाल्यकाल से ही जिज्ञासु तथा सत्य के अन्वेषक रहे। यही कारण है कि जहाँ एक ओर बालक मूलशंकर शिवालय में शिवपिण्डी पर चूहों को प्रसाद खाने तथा उछलकूद करते देखकर शंका करता है कि क्या यही शिव है, वहीं दूसरी ओर मुंशीराम भी विश्वनाथ के मन्दिर में परमेश्वर के दर्शन करने जाता है, किन्तु उन्हें इस कारण रोक दिया गया कि रीवाँ की महारानी दर्शन कर रही थी। मुँशी राम का जिज्ञासु मन बैचेन होकर पूछता है कि क्या यही जगत्पति का दरबार है जिसमें एक रानी के कारण परमेश्वर के भक्त को दर्शनों से रोक दिया गया?

महर्षि दयानन्द सत्य के पुजारी थे। उन्होंने असत्य से कभी भी समझौता नहीं किया। श्रद्धानन्द ने भी ऐसा ही किया। वे सर्वदा सत्य की ओर उन्मुख रहे। जब मुंशीराम के पिता ने उनसे मूर्ति के सामने सिर झुकाने को कहा तो उन्होंने स्पष्ट मनाकर दिया कि ऐसा करना मक्कारी होगी। उनकी इस स्पष्टवादिता का पिता पर भी यह प्रभाव पड़ा कि उन्होंने कहा–'**तुझे नास्तिक कहते हैं। नास्तिक तो ऐसा सच्चा नहीं होता**'।

स्वामी जी अपने गुरु की तरह परम ईश्वर–विश्वासी थे। उन्होंने महर्षि दयानन्द का आत्मा की अमरता पर व्याख्यान सुना था जो उनसे हृदय पर अमिट छाप छोड़ गया था। इसीलिए वे जीवन भर निर्भीक रहे। गाँधी जी लिखते हैं कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने मुझे बतलाया था कि उनके पास धमकी भरे पत्र आते रहते हैं तथापि दृढ़ विश्वासी स्वामी जी ने कहा कि सिवाय परमात्मा के मैं किसी और का सहारा क्यों ढूंढू। मैं समझता हूँ कि जब तक प्रभु मेरे इस शरीर से कुछ सेवा लेना चाहते हैं, तब तक मेरा कुछ नहीं हो सकता। '**कल्याणमार्ग का पथिक**' में भी वे ऐसा ही लिखते हैं कि मारने वाले से बचाने वाला अधिक बलवान् होता है। महर्षि दयानन्द ने भी अन्त में यह कहा था ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो! महर्षि दयानन्द सर्वस्व–त्यागी थे। धनी पिता के इकलौते पुत्र होने पर भी उसे छोड़ कर चले आए। दयानन्द का यह शिष्य भी इस मामले में पीछे न रहा। श्रद्धानन्द के त्याग की उपमा अन्यत्र मिलनी दुर्लभ है। सब कुछ सभा को दे दिया। ***सद्धर्म प्रचारक*** पत्र तथा प्रैस भी बेचकर सभा को पैसा दे दिया। अपने दोनों पुत्र भी गुरुकुल को सौंप दिए तथा वह कोठी जिस पर उनके पुत्रों का पैतृक अधिकार था, स्वामी जी ने संभा को दे दी। है कोई उदाहरण ऐसा?

स्वामी जी ने राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्र में देश का जो नेतृत्व किया उसका उल्लेख यहां नहीं किया जा रहा है। वह सर्वविदित ही है। हमने यहां उनके व्यक्तिगत गुणों का ही थोड़ा सा वर्णन किया है। स्वामी श्रद्धानन्द का आचार पर बहुत अधिक बल था। उनकी दृष्टि में देश की पराधीनता का कारण आचारभ्रष्ट होना भी था। इसीलिए वे लिखते हैं '**यदि जाति को स्वतंत्र देखना चाहते हो तो स्वयं सदाचार की मूर्ति बन कर अपनी संतान की सदाचार की बुनियाद रख दो।**' स्वामी जी ने स्वयं अपने जीवन में ऐसा किया।

अपने इन्हीं गुणों के कारण स्वामी श्रद्धानन्द ने आदर्श तथा अनुकरणीय जीवन जिया। वे स्वयं लिखते हैं 'मेरा जीवन अशातीत व्यतीत हुआ है।' इसीलिए गांधी जी ने उनकी मृत्यु पर कहा था कि स्वामी जी के निधन से उन्हें ईर्ष्या हो रही है कि वे इतने गुणी संन्यासी थे।

हम प्रतिवर्ष श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाते हैं किंतु श्रद्धानन्द के गुणों को कितने व्यक्ति सश्रद्ध धारण करते हैं? श्रद्धानन्द की श्रद्धा को हम अपने हृदय में भर सकते हैं। उनकी सत्यप्रियता को अपना सकते हैं जिसका कि आज अभाव हो गया। उनके बलिदान का स्मरण करके हम अपने मन में वीरता के भाव भर सकते हैं। ऐसे ऋषि भक्त का, धर्म जिज्ञासु का, सत्यान्वेषी का, समाज सेवक का तथा कल्याणमार्ग के पथिक का पवित्र स्मरण करके हम अपने जीवन को पवित्र कर सकते हैं, कल्याण मार्ग के पथिक बन सकते हैं। यदि हम ऐसा कर सकें तो बलिदान दिवस पर उस अमर बलिदान के प्रति हमारी यह सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

–बी–266 सरस्वती विहार
दिल्ली

☞ *पृष्ठ 05 का शेष*

स्वामी श्रद्धानन्दः जिन्होंने ...

में ही किया गया था।'' ('महात्मा गांधी और गुरुकुल', पृष्ठ 481) इस वृत्तान्त को लिखने वाले अन्य स्नातक लेखक हैं– डॉ. विनोदचन्द्र विद्यालंकार, इतिहासकार डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार, श्री दीनानाथ विद्यालंकार, श्री जयदेव शर्मा विद्यालंकार और डॉ. विष्णुदत्त राकेश आदि। कोई कारण नहीं कि विद्यार्थी अपने संस्मरणों को तथ्यहीन रूप में प्रस्तुत करें। अतः ये विश्वसनीय हैं।

श्री गांधी और महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) दोनों एक–दूसरे के महात्मापन के कार्यों से पहले से ही सुपरिचित थे, इसलिए दोनों के व्यवहार में आत्मीय और सहयोगिता का खुलापन था। कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर के साथ श्री गांधी का ऐसा सम्बन्ध नहीं था। दोनों के निकट सम्बन्धों की पुष्टि तीन विशेष घटनाओं से होती है। पहली घटना वह है जब दक्षिण अफ्रीका में चल रहे श्री गांधी के सामाजिक आन्दोलन के लिए 1500/– की आर्थिक सहयोग राशि राष्ट्रनेता श्री गोपालकृष्ण गोखले के माध्यम से गुरुकुल कांगड़ी के द्वारा भेजी गई थी। यह राशि गुरुकुल के विद्यार्थियों ने, सरकार द्वारा सन् 1914 में गंगा पर बनाये जा रहे 'दूधिया बांध' पर दैनिक मजदूरी करके और एक मास तक अपना दूध–घी त्याग पर उसके मूल्य से एकत्रित करके भेजी थी। इस मार्मिक घटना को सुनकर गांधी जी का हृदय द्रवित हो गया था। उन्होंने अनेक लेखों में इसकी चर्चा की है।

दूसरी घटना यह थी कि सन् 1915 में जब श्री गांधी दक्षिण अफ्रीका को छोड़कर भारत आ रहे थे तो उन्होंने स्वस्थापित फोनिक्स आश्रम के विद्यार्थियों को भी भारत भेज दिया। श्री टैगोर के आश्रम शान्ति निकेतन (तत्कालीन नाम ब्रह्मचर्याश्रम) में उनके निवास एवं खान–पान का प्रबन्ध सुचारु रूप से नहीं हो सका। तब गांधी जी ने उन विद्यार्थियों को महात्मा मुंशीराम के पास गुरुकुल कांगड़ी में भेज दिया। वहां वे अच्छे प्रबन्ध के साथ दो महीनों तक रहे। जब गांधी जी गुरुकुल में प्रथम बार पधारे थे तो उन्होंने अपने वक्तव्य में दोनों सहयोगों के लिए महात्मा मुंशीराम और विद्यार्थियों के प्रति आभार व्यक्त किया था।

तीसरी घटना यह है कि स्वामी श्रद्धानन्द की एक मुस्लिम हत्यारे के द्वारा हत्या होने के पश्चात् 9 जनवरी 1927 को गांधी जी बनारस गये। वहां गांधी जी और श्री मदन मोहन मालवीय जी ने, स्वामी श्रद्धानन्द के सिद्धान्तों के अनुकूल न होते हुए भी, अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि व्यक्त करने के लिए उनके लिए गंगा में जलांजलि प्रदान की और गंगा–स्नान किया।

पाठक इन घटनाओं से अनुमान लगा सकते हैं कि उस समय के राष्ट्र नेताओं का स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति कितना श्रद्धाभाव था और उनके कितने गहरे सम्बन्ध थे।

कुलपति
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

www.thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द की राष्ट्रवादिता

● डॉ. महावीर मीमांसक, वेद मार्तण्ड

स्वामी श्रद्धानन्द का पैतृक नाम मुन्शीराम था। उनके पिता तलवन (लुधियाना) के एक प्रतिष्ठित और सम्पन्न व्यक्ति थे। मुन्शीराम जी ने वकालत पास की और इसी को अपनी आजीविका बनाया। इस प्रकार के लोगों का अंग्रेज़ी रंग में रंगा जाना तो उस समय स्वाभाविक था ही किन्तु शराब, मांस और व्यभिचार तक का दुष्कृत्य भी इस वर्ग के लोगों में होना कोई बड़ी बात नहीं थी। मुन्शीराम जी भी कम अधिक रूप में इन सभी दोषों के शिकार थे। किन्तु अपनी भरी जवानी में मुन्शीराम जी उस समय के कट्टर भारतीयतावादी, क्रान्तिकारी और बालब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आ गए। शनैः शनैः स्वामी दयानन्द का रंग वकील मुंशीराम पर चढ़ना प्रारंभ हुआ। उन्होंने सभी दुर्गुणों का परित्याग किया। वकील मुंशीराम से महात्मा मुंशीराम बन गए और अन्ततोगत्वा स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। कल्याणमार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज ने अपनी सारी कहानी स्वरचित 'आत्मचरित्र'–*'कल्याण मार्ग का प्रथिव'* पुस्तक में लिखी है, जिसका अनुकरण महात्मा गांधी ने भी किया।

महात्मा मुंशीराम और स्वामी श्रद्धानन्द ने यूँ तो अपने जीवन में अनेक कार्य समाज और देश के हित में किए जिन पर पूरा ग्रंथ लिखा जा सकता है, किन्तु उनकी राष्ट्रवादिता जो अन्य सब कार्यों से सर्वोपरि थी वही यहाँ संक्षेप में उल्लेखनीय है।

स्वामी श्रद्धानन्द राष्ट्र के निर्माण और उन्नति के लिए राष्ट्र के मानवों का निर्माण सर्वप्रमुख समझते थे। और मानवीयकार्य का मूलाधार शिक्षा है जिसके क्षेत्र में उन्होंने क्रांतिकारी पग उठाए।

शिक्षा में समन्वय

स्वामी श्रद्धानन्द उच्चकोटि के देशभक्त थे। महात्मा गांधी के साथ कन्धे से कन्धा लगाकर देश की स्वतंत्रता के लिए हर प्रकार का बलिदान देने को तैयार थे। उनकी तेज़ नज़रों ने यह भाँप लिया कि अंग्रेज़ों द्वारा संचालित शिक्षा प्रणाली अधिकतर रूप से अंग्रेज़ी की दासता के समर्थक, उनकी शासन की मशीन को चलाने वाले पुर्जे कलर्क आदि ही तैयार कर रही है, जो अपनी संस्कृति, सभ्यता और इतिहास से सर्वथा अनभिज्ञ ही नहीं अपितु उसकी हीनता के संस्कार उनके मस्तिष्क पर ऐसे अंकित कर दिए जाते हैं कि वे अपने को भारतीय कहलाने में भी अत्यन्त लज्जा का अनुभव करते हैं। अतः वे ऐसी शिक्षा प्रणाली चाहते थे जिससे भारतीय लोग अपनी पुरानी संस्कृति–सभ्यता अपना इतिहास अपनी वेशभूषा और अपनी भाषा के गौरव को समझें और सिर ऊँचा उठा कर अपने आप को भारतीय कहें। इसके लिए उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अपनायी और 1901 में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की जो आज गुरुकल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। स्वामी जी संकीर्ण विचार के नहीं थे अपितु अत्यन्त उदारवान थे। अतः जहां वे प्राचीनता के समर्थक थे वहाँ आधुनिकता जितनी ग्राह्य है उसको भी वे छोड़ना नहीं चाहते थे अतः गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में प्राचीनता और आधुनिकता दोनों का समन्वय किया और सबसे पहले अपने दोनों लड़कों को गुरुकुल में प्रवेश करवाया। उनके मार्गदर्शन में गुरुकुल कांगड़ी ने अनेक देशभक्त नेता, विद्वान, लेखक और साहित्यकार पैदा किए। महात्मा गांधी ने जब गुरुकुल कांगड़ी की प्रसिद्धि सुनी तो उन्होंने उसे देखने की इच्छा प्रकट की। एक बार गुरुकुल कांगड़ी देख लेने के बाद तो महात्मा गांधी गाहे–बगाहे वहीं जाकर ठहरने लगे। यह उल्लेखनीय है कि महात्मा गांधी को सर्वप्रथम महात्मा कहना स्वामी श्रद्धानन्द ने ही प्रारंभ किया था।

राष्ट्रीय आन्दोलन

देश में महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वच्छता–आन्दोलन चल रहा था। स्वामी श्रद्धानन्द जी यद्यपि आर्य समाज के मूर्धन्य नेता थे किन्तु उन्होंने आर्यसमाज के अन्य कार्यक्रमों में अधिक प्राथमिकता राष्ट्र के आन्दोलन को दी। समूचे आर्यसमाज को इस आन्दोलन में झोंक दिया। पंजाब में इस आन्दोलन का नेतृत्व आर्यसमाजी नेता, परमदेशभक्त शेरे पंजाब लाला लाजपतराय को सौंपा और स्वयं भी देहली में इस आन्दोलन का नेतृत्व किया।

देहली में अंग्रज़ों के विरुद्ध सत्याग्रहियों का जत्था निकल रहा था। स्वामी श्रद्धानन्द जी आगे–आगे उसका नेतृत्व कर रहे थे। जत्था घन्टाघर के पास पहुँच गया। घन्टाघर पर सत्याग्रहियों पर अत्याचार करने के लिये अंग्रेज़ों ने गोरखा पलटन खड़ी कर रखी थी। ज्यों ही स्वामी श्रद्धानन्द जी जत्थे का नेतृत्व करते हुए घन्टाघर पर पहुँचे एक गोरखा सिपाही ने संगीन उनकी छाती की ओर तानते हुए कहा 'खबरदार! एक कदम भी और आगे बढ़े तो संगीन छाती से पार हो जाएगी। देश के लिए अपने प्राणों तक की बाजी लगाने वाले निडर संन्यासी ने भी आगे बढ़कर अपनी छाती गोरखा की संगीन के आगे तानते हुए कहा मेरी छाती खुली है, यदि हिम्मत हो तो अपनी संगीन चलाओ। दो मिनट तक स्वामी जी की छाती गोरखा की संगीन के सामने तनी रही, गोरखा की संगीन पीछे हट गयी, स्वामीजी उसी तरह सीना ताने जत्थे का नेतृत्व करते हुये आगे बढ गए।

जामा मस्जिद पर भाषण

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की राष्ट्रवादिता और एकता के प्रतीक होने का यह प्रबल ऐतिहासिक प्रमाण है कि उन्हें मुस्लिम समुदाय ने अपने ऐतिहासिक धार्मिक स्थल देहली के लाल किले के सामने स्थित जामा मस्जिद पर समूचे देशभर के मुस्लिम वर्ग को भाषण द्वारा सम्बोधित करने और उन्हें वैदिक मानवतावाद की शिक्षा देने के लिए आमंत्रित किया। यह घटना न केवल आर्यसमाज के इतिहास में, अपितु समस्त विश्व के इतिहास में अद्वितीय है कि किसी भिन्न समुदाय के लोगों ने अपने से विरोधी धार्मिक मन्तव्यों वाले व्यक्ति को अपने उच्चतम धार्मिक स्थल पर भाषण देने के लिए आमंत्रित किया हो। स्वामी श्रद्धानन्दजी का जामा मस्जिद से किया गया वह भाषण आज भी प्रासंगिक है और विश्व भर के मुस्लिम वर्ग के लिये अनुकरणीय है। जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल बुखारी को चाहिए कि वह मुस्लिम वर्ग को राष्ट्रवाद और एकता की शिक्षा देने के लिए स्वामी श्रद्धानन्दजी के उस भाषण को प्रतिदिन जामा मस्जिद से प्रसारित और प्रचारित करें। आर्यसमाज यह कार्यक्रम प्रतिवर्ष 25 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष में जामा मस्जिद के सामने सुभाष पार्क में आयोजित करता है, वह कार्यक्रम मुस्लिम समुदाय को आयोजित करना चाहिए और स्वामीजी के उसी भाषण को दोहराना चाहिए।

शुद्धि आन्दोलन

इसी राष्ट्रवाद और एकता की कड़ी को सुदृढ़ बनाने के लिए स्वामीजी ने शुद्धि आन्दोलन प्रारंभ किया जिसका महत्व राष्ट्र के इतिहासकारों की तो बात ही दूर रही स्वयं आर्यसमाज के विद्वानों ने पूरी तरह नही समझा और उसकी व्यवस्था नहीं की।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के शुद्धि आन्दोलन का अर्थ धर्मान्तरण या धर्म परिवर्तन नहीं है। ये शब्द अत्यन्त संकीर्ण और धर्म शब्द के अर्थ को न समझने के कारण प्रयुक्त होते हैं। धर्म तो सबका एक ही है और वह है मानव धर्म, जिसमें एक दूसरे के प्रति–स्नेह सम्मान, ईमानदारी, सच्चाई, सदाचार, सज्जनता, ठगी और चोरी आदि का अभाव, अहिंसा, शौच, सन्तोष, विद्या और ज्ञान की वृद्धि और उन्नति आदि सार्वभौमिक और सार्वकालिक मानवीय गुण शामिल हैं? जिन्हें स्वामी दयानन्द ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में विभिन्न समुदायवादियों से प्रश्न करके पूछा कि बताओ कौन ऐसा धर्म (समुदाय) है जो इन उपयुक्त गुणों को धर्म नहीं मानता और इसके विपरीत हिंसा, चोरी, मिथ्या भाषण, दुराचार आदि को अधर्म न मानकर धर्म मानता है। अतः स्वामी श्रद्धानन्द जी इन्हीं सार्वभौम और सार्वकालिक मानवीय गुणों को धर्म मानते थे। उनके शुद्धि आन्दोलन का अभिप्राय धर्मान्तरण या धर्मपरिवर्तन नहीं था। ये तरीके तो संकुचित, क्षुद्राशय और चालाक लोगों के हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी के शुद्धि आन्दोलन का अर्थ अत्यन्त उदार, महान, आशयता और बुद्धिवाद तथा भक्ति और तर्कवाद पर आधारित था।

स्वामी जी के शुद्धि आन्दोलन का प्रथम अर्थ तो उन भटके हुए लोगों को सही मार्ग पर लाना था जो अपने अज्ञान के कारण या पिछले समय के अपने पूर्वजों की राजनीतिक या सामाजिक विवशता की परिस्थितियों के कारण इस मानवतावादी सच्चे धर्म को भूलकर भटक गए थे और धर्म की कल्पित, मनघढ़न्त व्याख्याओं पर खड़े विभिन्न सम्प्रदायों को अपना चुके थे। शुद्धि आन्दोलन कोई धर्म–परिवर्तन या धर्मान्तरण नहीं था, अपितु मन, बुद्धि, विचार और कर्मों की शुद्धि था। इसीलिए उन्होंने इसे शुद्धि आन्दोलन का नाम दिया।

स्वामीजी के शुद्धि आन्दोलन की व्याख्या तत्कालीन राष्ट्रवाद के परिप्रेक्ष्य में थी, जिसकी तलाश स्वामी जी के अनन्य मित्र और उससे अधिक अनेक राष्ट्रीय समस्याओं में परामर्श लेने वाले महात्मा गांधी जी कर रहे थे, करनी अपेक्षित और आवश्यक है जो सम्भवतः आर्य समाज के विद्वान नहीं कर पाए हैं।

तत्कालीन देश की स्वतंत्रता के लिए एक ओर राष्ट्रवादी शक्तियाँ अपना काम कर रहीं थीं तो दूसरी ओर इस राष्ट्रवादी आवाज के विरोध में साम्प्रदायिक झण्डा उठा कर देश के विभाजन की विभीषिका मुंह फाड़ कर राष्ट्रवादी नेताओं को भयभीत कर रही थी। ऐसे समय में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि आन्दोलन को इस साम्प्रदायिक महारोग की समाप्ति के लिए रामबाण के रूप में प्रस्तुत किया और प्रयुक्त किया। यदि यह नुस्खा सफल हो जाता तो तत्कालीन राष्ट्रवादी शक्तियाँ इसके महत्व को समझकर इससे पूरा सहयोग करती तो देश की अखण्डता अक्षुण्ण बनी रहती और सन् 1947 में देश का साम्प्रदायिक विभाजन न होकर एक अखण्ड राष्ट्र के रूप में स्वतंत्रता मिलती। स्वामीजी महाराज की यही अद्भुत राष्ट्रवादिता थी।

एकता के प्रतीक

23 दिसम्बर 1976, स्वामी श्रद्धानन्द जी की बलिदान जयन्ती मनायी गई। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज हिन्दु–मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। वस्तुतः वे मानव–मानव के बीच से साम्प्रदायिक धर्म के नाम पर खड़ी दीवारें गिरा देना चाहते थे, मानव जाति में एक दूसरे के प्रति घृणा, ईर्ष्या और शत्रुता के प्रबल कारण सम्प्रदायों को समाप्त कर देना चाहते थे। मानव जाति के अन्दर अनेक ऐतिहासिक युद्धों के एकमात्र कारण कल्पित धर्म के कच्चे धागे तोड़कर मानव मात्र को एक–दूसरे के गले

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

प्रेरक जीवन के धनी–स्वामी श्रद्धानन्द

● डॉ. महेश विद्यालंकार

इस देश को महापुरुषों की लम्बी परम्परा प्राप्त रही है जिन्होंने देश–धर्म–जाति व संस्कृति की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। इसी बलिदानी परम्परा में स्वनामधन्य स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान और कार्यों को देश श्रद्धा व सम्मान से स्मरण करता है। वे श्रद्धा त्याग, दृढ़ता और आत्मविश्वास की प्रतिमूर्ति थे। उनका व्यक्तित्व और कृतित्त्व सहरानीय था। उनकी तप–त्याग तपस्या, सेवा, श्रद्धा, वीरता, दृढ़ता और राष्ट्र प्रेम आदि वन्दनीय हैं। उनकी गुरुभक्ति स्पृहणीय है। उनके कार्य पशसनीय हैं। उनका बलिदान प्रेरणीय है। उनका जीवन–चरित्र पठनीय है। उनकी दुर्गुण व दुर्व्यसनों से मुक्ति स्मरणीय है। उनकी देश–धर्म जाति की सेवा श्लांघनीय है। उनका सर्वस्व समर्पण आदरणीय है। उनका संगीनो के सामने सीना खोलकर खड़े हो जाना नमनीय है। उनका सम्पूर्ण जीवन अतुलनीय है।

जब इस महापुरुष के पूर्व जीवन का सिंहावलोकन करते हैं तो एक ऐसे व्यक्ति का शब्द चित्र बनता है जिसमें कई बुराईयाँ थीं। नास्तिकता और भोग विलासमय जीवन जीने वाला धर्म–कर्म, ईश्वर–भक्ति, परोपकार आदि से दूर रहने वाला। जब ऋषिवर दयानन्द के चुम्बकीय व्यक्तित्व और अगाध ज्ञान का स्पर्श हुआ तो ज्ञान–चक्षु खुल गए। कार्याकल्प हो गया। जीवन की दिशा बदल गई। जीवन का सारा रंग–ढंग ही बदल गया। मुन्शीराम पर प्रभु–कृपा हुई। वे पतित जीवन से उठकर प्रेरक जीवन की ओर चल पड़े। आस्तिकता के सुप्त संस्कार जाग उठे। यह तभी संभव हुआ जब उनके हृदय में सत्य, श्रद्धा, विवेक, आस्तिकता आदि भाव आए। यदि हम सीखना चाहें तो स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से बहत कुछ सीख सकते हैं।

हमारे जीवनों में अनेक दुर्गुण दुर्व्यसन व बुराईयाँ घर किए बैठी हैं। जो दिन–रात खोखला कर रही हैं। हम अपने सत्य स्वरूप को भूलते जा रहे हैं। इतना सुनने, पढ़ने और देखने के बाद भी हमारा सुधार नहीं हो पा रहा है। क्योंकि हमारे अन्दर छोड़े का संकल्प, व्रत व दृढता नहीं है। जब मुन्शीराम श्रद्धानन्द बन सकते हैं तो हम क्यों नही ऊपर उठ सकते है? बात कहने की नहीं करने की है। वे वाक्–शूर नही, कर्मशूर थे। जो कहा उसे कर दिखाया। उनके जीवन का कथनी करनी का, पक्ष संसार को असत्य से सत्य की ओर अधर्म से धर्म की ओर नास्तिकता से आस्तिकता की ओर, अश्रद्धा से श्रद्धा की ओर चलने की प्रेरणा देता रहेगा। ऐसा व्रती संकल्पी कर्मठ चरित्र इतिहास में दुर्लभ मिलता है जो इतने पतन से इतना ऊंचा उठा हो, जिसने इतिहास से लम्बी लकीर खींच दी हो। जिसने ऊंचाई की सभी बुलन्दियाँ छू ली हों। जिसने दुर्दान्त डाकूओं को भी साहस–वीरता, तप–त्याग आदि में अपनी ओर आकर्षित कर लिया हो। जो हिंसक जन्तुओं को भी अपने सानिध्य में बैठाने का साहस रखता हो।

स्वामी श्रद्धानन्द ऋषि दयानन्द के सच्चे अर्थ में उत्तराधिकारी थे। ऋषि ने जो आदर्श, मन्तव्य, सिद्धान्त विचार आदि दिए, उन्हें इस महापुरुष ने क्रियात्मक साकार रूप दिया। इनका जीवन संघर्षों कठिनाइयों व चुनौतियों से निकला। किन्तु उस महापुरुष ने **'चरैवेति चरैवेति'** का मूल मंत्र कभी नहीं छोडा। अपने गुरु का मान बढ़ाया। वैदिक विचारधारा को यश दिलाया। गुरुकुल कागड़ी की स्थापना करना, उस समय शिक्षा के क्षेत्र में महान क्रान्ति थी। उनकी यह कल्पना ऋषि की शिक्षा पद्धति पर आधारित थी। जिस गुरुकुल का उद्देश्य था वैदिक ज्ञान विज्ञान, आदर्शों, मानवता और सद्चरित्र वाले देश को नागरिक प्रदान करना। गुरुकुल के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। इस संस्था ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की।

गुरुकुल कांगड़ी स्वामी श्रद्धानन्द का स्मारक है। किन्तु आज वह स्मारक ढह रहा है। हम बेखबर हैं। इतिहास साक्षी है कि स्वामी श्रद्धानन्द ही ऐसे महापुरुष थे कि जिन्हें जामास्जिद से हिन्दू–मुस्लिम एकता के भाषण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके एकता के प्रयास सदा स्मरणीय रहेंगे। चाँदनी चौक में जलूस का नेतृत्व करते हुए गौरखा सिपाहियों के सामने सीना तानकर खड़े हो जाना और कहना–चलाओ मेरे सीने पर गोलियाँ। स्वामी श्रद्धानन्द जैसा निडर, निर्भीक, देशभक्त ही कह सकता है। शुद्धि आन्दोलन में प्राणों का खतरा मोल लेने वाले श्रद्धानन्द में अपार वीरता, दृढ़ता, साहस सेवा और बलिदान आदि भाव कूट–कूट कर भरे थे। उन्होंने आर्य संस्कृति, शिक्षा, धर्म, राजनीति, समाज–सुधार, नारी–शिक्षा शुद्धि आन्दोलन आदि क्षेत्रों में नव–निर्माण की चेतना फैलाई।

उनके बलिदान पर जो श्रद्धांजलियाँ और उद्‌गार देश विदेश से प्राप्त हुए थे उनसे सहज ही उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की झलक मिलती है। किसी ने उन्हें राष्ट्र निर्माता, किसी ने महान स्वतन्त्रता सेनानी, किसी ने पथ–प्रदर्शक, किसी ने वीरता और बलिदान की मूर्ति, किसी ने हिन्दु जाति का चौकीदार, किसी ने सभी का हितैषी, किसी ने हिन्दु–मुस्लिम एकता का पक्षधर किसी ने सामाजिक राष्ट्रीय सुधारक, किसी ने सेवा और त्याग की मूर्ति, किसी ने देदीप्यमान नक्षत्र, किसी ने अमर शहीद किसी ने प्रेरक गुरु आदि विशेषताओं से सम्मानित और स्मरण किया था।

प्रतिवर्ष श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आता है, जलसे जलूस तक सिमटकर रह जाता है। कहीं रचनात्क प्रभावात्मक और निर्माणात्मक चेतना व ललक नज़र नहीं आ रही है। आज के जीवन और जगत् के सन्दर्भों में आर्य समाज तथा उनकी विचारधारा की प्रबल आवश्यकता है। क्योंकि अन्धकार, गुरुडम, पाखण्ड, अधर्म आदि तेजी से बढ़ रहा है। आर्य–समाज ही इन प्रश्नों का सटीक उत्तर दे सकता है। आज आर्यसमाज को आवश्यकता है प्रेरक, आदर्श, चरित्रवान्, सेवाभावी, तपस्वी, त्यागी, मिशनरी भावना वाले अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, उपदेशकों, विद्वानों, पुरोहितों आदि की। इन सबका बड़ी तेजी से अभाव हो रहा है। जो है वे सभी अपने समाज, आश्रमों, संस्थाओं व संगठनों का रास्ता जनता को दिखा रहे हैं। दयानन्द और आर्य समाज का रास्ता दिखाने वाले कम हो रहे हैं। यह आर्य समाज के लिए महती चिन्तनीय चिन्ता होनी चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द का कथन बड़ा सटीक लगता है।

आर्य समाज को नेताओं की नहीं सेवकों की जरूरत है। कैसी विचित्र विडम्बना है कि इतने स्कूल, कॉलेज, गुरुकुल, संस्था, संगठन, आश्रम और समाजें हैं किन्तु एक भी हंसराज, श्रद्धानन्द, गुरुदत्त लेखराम, दर्शनानन्द नहीं बन पा रहा है। यही मूल में भूल हो रही है। हम ऊपर से समाजी बन रहे हैं, अन्दर आर्य नहीं बन पा रहे।

ऐसे अवसर आते हैं हमें आत्म निरीक्षण की प्रेरणा देने के लिए। संकल्प और व्रत दुहराने के लिए। प्रेरक महापुरुषों के व्यक्तित्व और कृतित्व से सेवा, त्याग, उपकार, भावना व विनम्रता का पाठ सीखने के लिए। श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का यही सन्दर्भ हैं कि हम भी देश, धर्म, जाति, संगठन, संस्था व गुरु के लिए कुछ देने की, त्याग करने की भाव–भावना अपने अन्दर जागृत करें।

बी.जे.–129
पूर्वी शालीमार बाग
नई दिल्ली

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत् त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।।

यजु. 40.17

www.thearyasamaj.org

वाणी का महत्त्व

● नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

वाणी का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्त्व है। वाणी से बोली गई भाषा वक्ता के भावों की संवाहिका होती है। वाणी द्वारा ही मनुष्य अपने भावों को दूसरे के मन में संप्रेषित कर सकता है। वाणी मनुष्य के चरित्र को दर्शाती है और मनोभावों का प्रकटीकरण करती है। वाणी से सुख और दुःख उपजते हैं और मनुष्य की शांति और अशांति का सीधा संबंध मनुष्य की वाणी से होता है। तीरों तलवारों से लगे घाव समय के साथ भर जाते हैं लेकिन कटुवाणी से मन पर लगा घाव कभी नहीं भरता। इसका इतिहास प्रसिद्ध उदाहरण द्रौपदी का व्यंग्य **"अंधों के पुत्र अंधे"** जिससे महाभारत के युद्ध की नींव पड़ गई थी।

इसीलिए कहा जाता है कि मनुष्य को सदा तोल–मोल कर बोलना चाहिए। ऋग्वेद में मंत्र आया है **"सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमकृत।"** अर्थात जैसे छलनी में छान कर सत्तू को साफ किया जाता है उसी प्रकार बुद्धिमान लोग ज्ञानरूपी छलनी द्वारा वाणी को शुद्ध करके प्रयोग करते हैं और हितैषी विद्वान् लोग हित की बातों को समझते हैं। उनकी वाणी में कल्याणप्रदा लक्ष्मी रहती है। इस वेदमंत्र में दो सामान्य सी घर की दैनिक प्रयोग की वस्तुओं सत्तू और छलनी की उपमा दी गई है। जिस प्रकार सत्तू को छलनी से छान कर तिनके रेत आदि इतर पदार्थों को निकाल दिया जाता है या फिर ना पचने के योग्य कर्कश अंश छान लिए जाते हैं और शुद्ध सत्तू जो कि रेत, कंकर आदि अन्य पदार्थों तथा मोटे अपाच्य पदार्थों से मुक्त हो जाता है वह स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होता है। इस उपमा का प्रयोग वाणी और बुद्धि जैसे सूक्ष्म उपमेयों के लिए किया गया है। वेदमंत्र बड़े स्पष्ट रूप से इस उपमा के माध्यम से संदेश देता है कि मनुष्य को वाणी का प्रयोग बड़ी सावधानी से बुद्धि की चलनी से छानकर करना चाहिए और कभी भी असत्य चाहे व प्रिय ही क्यों ना हो जैसे इतर पदार्थों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। साथ ही साथ अप्रिय कटु सत्य का प्रयोग करने से बचना चाहिए। जैसे काने को काना कहना चाहे, सत्य ही क्यों ना हो, लड़ाई मोल लेने के समान है। कठोर शब्दों में कहे गए हितकर वाक्यों को सुनकर भी मनुष्य रुष्ट हो जाता है। कटु वचन क्रोध की अग्नि में ईंधन के समान उसे भड़का देते हैं जबकि विनम्र कोमल सत्य क्रोध की अग्नि पर शीतल जल के छींटे के समान होता है। इसीलिए कहा गया है **"सत्यम् ब्रूयात् प्रियम् ब्रूयात्"** अर्थात सत्य बोलें, प्रिय बोलें किन्तु अप्रिय सत्य या प्रिय असत्य ना बोलें। किसी के साथ व्यर्थ वैर और शुष्क विवाद ना करें। प्रिय होने पर भी जो वचन हितकर ना हो उसे नहीं करना चाहिए और हितकर बात चाहे सुनने में अप्रिय ही क्यों ना लगे, अवश्य कह देनी चाहिए क्योंकि मलेरिया ज्वर की अवस्था में कुनीन की कड़वी दवा भी मीठी औषधि के समान होती है।

वाणी का संयम मनुष्य के जीवन का आभूषण है। व्यर्थ व अनुपयोगी बोलना भी अनुचित होता है। जो व्यक्ति उपयोगी और अनुपयोगी का अंतर समझ लेते हैं वह कभी व्यर्थ शब्द व्यक्त नहीं करते। महात्मा विदुर ने कहा कि कम बोलने से मन की शक्ति बढ़ती है। प्रश्न का समय पर उपयुक्त उत्तर देना आनंद प्रदान करता है और उचित समय पर कही गई बात ज्यादा वजन रखती है। सही कहा गया है कि पशु ना बोलने के कारण और मनुष्य व्यर्थ कटु बोलने के कारण कष्ट उठाते हैं। जो व्यक्ति अपने मुख और जिह्वा पर संयम रखता है वह अपनी आत्मा को संतापों से बचाता है। महात्मा गांधी ने कहा कि मौन से अच्छा भाषण दूसरा कोई नहीं, फिर भी यदि बोलना पड़े तो जहाँ एक शब्द से काम चलता हो, वहाँ दूसरा शब्द नहीं बोलना चाहिए। मौन का महत्त्व तो उस अज्ञानी से पूछो जो ज्ञानियों की सभा में जा बैठा हो। जो इंसान तोल मोल कर नहीं बोलता, उसे अक्सर कटु वचन सुनने पड़ते हैं। प्रत्येक स्थान और बोलने के योग्य नहीं होता कभी–कभी मौन वाणी से अधिक प्रभावी सिद्ध होता है। इसीलिए कहा जाता है कि धैर्यपूर्वक सबकी बात ध्यान से सुनो परन्तु अपनी सलाह बिना माँगे मत दो और केवल थोड़े ही उन मनुष्यों को दो जो धैर्यपूर्वक सुनकर उनके अनुसार कार्य करें।

मनुष्य की वाणी का मनुष्य जीवन में अत्यंत महत्त्व है। वाणी भाषा के माध्यम से भावों की संवाहिका बनती है। मनुष्य को सदा बुद्धि की छलनी से छान कर प्रिय सत्य ही बोलना चाहिए। अप्रिय सत्य या प्रिय असत्य कभी ना बोलें। शब्द का महत्त्व समझें और व्यर्थ शब्दों का प्रयोग कदापि ना करें।

602 जी एच 53
सैक्टर 20, पंचकूला
मो. 09467608686
01724001895

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

मानव जीवन गाथा...

के दो शहतीर उसके ऊपर इस प्रकार आ गिरे कि उसे चोट नहीं लगी। एक छोटा–सा स्थान बन गया, जहाँ वह बैठा रहा। केले पड़े रहे आस–पास। सब मलबा हो गया, अन्धकार भी हो गया। तभी एक बार फिर पृथिवी हिली। दुकान का फर्श फट गया। उससे होकर शुद्ध जल बाहर आने लगा। सब–कुछ बताकर उसने कहा, "मैं केले खाता रहा, पानी पीता रहा। वायु कहाँ से आती थी, यह मुझे पता नहीं लगा; परन्तु कहीं–न–कहीं से आती थी अवश्य, क्योंकि मुझे श्वास लेने में कष्ट नहीं हुआ।" अन्त में उसने कहा, "मैं चौदह दिन तक केलों पर निर्वाह करता रहा। परन्तु आज से दो दिन पूर्व, केले रह गये थे तीन। मैंने समझा अब मरूँगा अवश्य। परन्तु तभी ऊपर मलबा खोदने की ध्वनि आने लगी। आज प्रातः अन्तिम केला भी समाप्त हो गया, परन्तु मलबा हटाने की ध्वनि अधिक निकट हो रही थी। मैंने पुकारने का प्रयत्न किया परन्तु मेरी पुकार जैसे अन्धकार से टकराकर रह गई; और फिर पुकारना भी छोड़ दिया। प्रभुविश्वास पर बैठा रहा और तब आप लोग आ गये।"

उस बात को अब भी मैं स्मरण करता हूँ तो हृदय में आनन्द जाग्रत हो जाता है। यह है सेवा का फल! दुःखी की, निर्धन की, रुग्ण की, आर्त्त की सेवा करो, सहायता करो तो मन का मैल दूर होता है। उसमें दिव्यता और जागृति आती है। वह ज्ञान उत्पन्न होता है जिसके सम्बन्ध में कुछ बातें आपको बता चुका हूँ।

यह है आत्मदर्शन का मार्ग। यह है जीवन–गीत की वह तान जहाँ पहुँचकर यह गीत आनन्द से भरे हुए अमृत का उछलता हुआ सागर बन जाता है।

इन सात दिनों में सबसे पूर्व मैंने आपको बताया कि अपने–अपने शरीर की रक्षा करो, अपने स्वास्थ्य को सुन्दर बनाओ और अच्छे स्वास्थ्य के लिए लिए मन को प्रसन्न रखो। फिर बताया कि मन को कैसे प्रसन्न रखा जाता है, कैसे इसमें सात्त्विक भावना उत्पन्न की जाती है, कैसे इन्द्रियों का दमन किया जाता है और इन्द्रियों का दमन करने से कैसे आत्मा जाग उठता है।

यह सब–कुछ हो जाय, तभी मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्य बनता है, नहीं तो उसमें और पशु में क्या अन्तर है? सच्ची मानवता प्राप्त करने के पश्चात् जीवन का सितार बजाओ। इसके झनझनाते तारों पर विश्व–कल्याण के गीत गाओ।

क्रमशः....

☞ *पृष्ठ 07 का शेष*

स्वामी श्रद्धानन्द की...

लगाने के महान कार्य को अपने जीवन में ही मूर्तरूप देना चाहते थे। अपने जीवन के अन्तिम भाग में उन्होंने इसी कार्य को अपना महान उद्देश्य बनाया था क्योंकि उनका यह दृढ़ विश्वास था कि जब तक देश में से यह साम्प्रदायिक विष की लता समूल नष्ट नहीं हो जाती तब तक भारत को स्वतंत्रता मिल जाने पर भी उसकी राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ नहीं हो सकती। इसीलिए उन्होंने वेद की शिक्षाओं के आधार पर मानवमात्र को एक करना चाहा क्योंकि वेद में किसी धर्म विशेष या सम्प्रदाय विशेष या मनुष्य–विशेष का नाम लेकर शिक्षा नहीं दी गयी अपितु मानव मात्र को समानरूप से सच्चाई, ईमानदारी, सच्चरित्रता आदि मानवमात्र के समान रूप से अपेक्षित और सभी सम्प्रदायों में समान रूप से सम्मत नैतिक शिक्षाओं का प्रतिपादन किया गया है जिनके आधार पर मानव वस्तुतः मानव कहलाता है। वेद में सूत्ररूप से कही बात **"मनुर्भव"** (तू इन्सान बन) इन शब्दों में कही गई है। किन्तु कार्य जितना महान और उत्तम होता है उसके रास्ते में बाधा डालने वाले काँटे भी उतने ही अधिक होते हैं। एक मतान्ध युवक मन ही मन उनकी जान का दुश्मन बन गया और 25 दिसम्बर सन् 1926 को अवसर पाकर उस महान् आत्मा को हमेशा के लिए भौतिक शरीर से पृथक् कर दिया। उनकी शवयात्रा में मानवता की एकता के हामी सभी वर्ग के व्यक्तियों ने शामिल होकर अपनी श्रद्धांजलि दी। पं. जवाहर लाल नेहरु और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी श्रद्धांजलि और शोक संदेश भेजे।

आर्य समाज के लिए अनुकरणीय

स्वामी श्रद्धानंद की राष्ट्रवादिता आज आर्यसमाज के लिए अनुकरणीय है। राष्ट्रीय आन्दोलन के सामने स्वामी जी ने आर्यसमाज के अन्य कार्यक्रमों को गौण समझा और सम्पूर्ण आर्य समाज की शक्ति इस कार्य में लगा दी। आज राष्ट्र के सामने अनेक विषम समस्यायें हैं। यदि आर्यसमाज का नेतृत्व पदलिप्सा और स्वार्थ से ऊपर उठकर स्वामी श्रद्धानंद की तरह परम राष्ट्रवादी बन जाए तो राष्ट्रीय समस्यायें सुलझाने में काफी सहयोग मिल सकता है। वे प्रायः कहा करते थे कि अधिकार शब्द में मुझे स्वार्थ की गंध आती है। ऐसे निःस्वार्थ स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज के जीवन के आदर्श उन आधुनिक सभी राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने में सशक्त साधन बन सकते हैं और आर्य समाज का मार्ग भी प्रशस्त हो सकता है।

ए–3/11 पश्चिम विहार नई दिल्ली–110063
9811960640

www.thearyasamaj.org

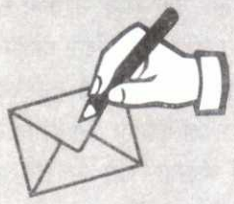

पत्र/कविता

9 नवम्बर से 30 दिसम्बर तक को अनुशासन पर्व के रूप में मनायें

यह तो सर्वविदित है कि विगत दो दशकों से हमारे भरत में असहिष्णुता शब्द का व्यापक स्तर पर प्रसार हुआ है। ऐसा क्यों? लद्दाख से लेकर कन्याकुमारी तक तथा कच्छ से लेकर सुन्दर वन तक के निवासी असहिष्णुता से उद्वेलित हैं।

हमारे प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस असहिष्णुता को विराम देने के लिए प्रथम चरण में आर्थिक क्षेत्र में अकुंश लगाने हेतु एक हज़ार और पाँच सौ रुपये के करेंसी नोट को अमान्य किया? वह बधाई के पात्र हैं!

यह खेद है कि देश के समस्त राजनैतिक दल, धार्मिक संस्थान, शिक्षा, तथा स्वास्थ्य आदि से जुड़े लोग असहिष्णुता से ग्रस्त हो रहे हैं परन्तु उनको सहिष्णु बनाने के प्रयास भी तो शून्य के बराबर रहे।

देश के प्रत्येक नागरिक से नम्र निवेदन है कि परिवार, समाज, राष्ट्र को सहिष्णु बनाने हेतु प्रधान मंत्री के कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करने का प्रयास किया जाये। 9 नवम्बर से 30 दिसम्बर को अनुशासन पर्व के रूप में मनायें।

कृष्ण मोहन गोयल,
113–बाजार कोट अमरोहा–24421

****

श्रद्धानन्द सुगन्धित सोना

सामवेद का गान था।
मीठी वैदिक तान था।
कहते लोग महामानव किस मिट्टी का इन्सान था।
मुंशीराम नाम का खत्री भटक गया था जो पथ में।
सुरा–सुन्दरी आ बैठे जिसके किशोर जीवन–रथ में।
गंगा की पवित्र धारा में आया था अवरोध ज़रा,
डरा मंगलाचरण अभी से पूर्ण विराम लगा अथ में।
कमल धंसा था पंक में।
जैसे लक्ष्मी रंक में।
दयानन्द का वरद् हस्त पा बदला पूर्ण विधान था।
सामवेद का गान था मीठी वैदिक तान था।

पूर्ण समर्पण किया देव के चरणों में झट 'राम' ने।
कर्मयोग की दीक्षा ले ली हो जैसे विश्राम ने।
कायाकल्प हुआ था अब तो जर्जर मुंशीराम का,
महाकाव्य रचने की ठानी जैसे अर्ध विराम ने।
साध्य साधना मिलन हुआ।
भगा दूर वासना धुआँ।
रोग भोग छूटे जीवन में उठा नया तूफान था।
सामवेद का गान था मीठी वैदिक तान था।

गुरुकुल परम्परा की नींव इसी स्वामी ने ही डाली।
जीवन दीप धूप भावों की बनी देह पूजा थाली।
सरस्वती के मन्दिर को हर भाँति संवारा सजा दिया,
चमन फूलता फलता जाता चला गया लेकिन माली।
संस्कृति की वह शान था।
भारतीय आख्यान था।
पतझड़ के रोते आंगन में वासन्ती मुस्कान था।
सामवेद का गान था मीठी वैदिक तान था।

राणा का सा स्वाभिमान और वीर शिवा की सूझ भरी।
प्राण फूंकने चला अभय हो राष्ट्रदेह थी पड़ी मरी।
गांधी जी ने भी श्रद्धा से जिनको गुरुवत् नमन किया,
निश्छल निर्भय सारी बातें कह देता था खरी–खरी।
संकट में मुस्काता था।
गीत ओज के गाता था।
अभिशापों के बीच खड़ा सबसे ऊँचा वरदान था।
सामवेद का गान था मीठी वैदिक तान था।

बीच चांदनी चौक गोरखों को केहरि ने ललकारा।
गैरिक वस्त्रों में मुस्काता रक्त कमल पर ज्यों पारा।
सूरज की गर्जना सुनी अगणित तारे भयभीत हुए।
संगीनें झुक गईं करवां बढ़ा तोड़ निर्मम कारा।
देह धार वीरता चली।
दृश्यमान धीरता चली।
स्वामी श्रद्धानन्द असल में देश धर्म का प्राण था।
सामदेव का गान था मीठी वैदिक तान था।

शुद्धि चक्र का बना सारथी सत् स्वरूप दर्शाने को।
भटक गए थे जो राही उनको सत्पथ दिखलाने को।
सीने में गोली खाई पर पीछे हटा न घबराया।
माँ के जाये बिछुड़े भाई पुनः गले लिपटाने को।
अब्दुल, रशीद हत्यारा।
जीवन दीप बुझा डारा।
राष्ट्र यज्ञ में सब कुछ बांटा दानी बन गया दान था।
कहते लोग महामानव किस मिट्टी का इन्सान था।

जामा मस्जिद के मिम्बर से वेदमन्त्र का पाठ किया।
दिल्ली का बेताज बादशाह दिल में बसकर ठाठ किया।
अन्तिम यात्रा ऐसी निकली सारे कीर्तिमान टूटे,
श्रद्धानन्द सुगन्धित सोना हर पत्थर को काठ किया।
तनमन दान सब होने दिया।
ओ३म् सोम भर व्योम दिया।
दयानन्द के लिए 'मनीषी' वह अद्भुत हनुमान था।
सामवेद का गान था मीठी वैदिक तान था।

डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी
ए–1/13–14 सै. 11 रोहिणी, दिल्ली
मो. 9810835335, 8527835835

अमन नहीं होगा अगर सच का सामना नहीं करेंगे

पाकिस्तान के आतंकवादी भारत में आक्रमण करने आते, दस–बीस पचास लोगों को मार जाते। पाकिस्तान से कहा जाता। पाकिस्तान कहता हमारा तो कोई आतंकवादी है ही नहीं। हम स्वयं आतंकवाद से पीड़ित हैं। इस बार भारत ने पाकिस्तान में घुस कर आतंकवादी मार डाले। पाकिस्तान कहता है हमारे दशे में भारत का कोई सर्जिकल आपरेशन हुआ ही नहीं। पाकिस्तान अद्भुत् इस्लामिक देश है और पाकिस्तान की इस्लामिक सच्चाई भी अद्भुत है। चित भी मेरी, पट भी मेरी, सिक्का इस्लाम का। क्या सचाइयाँ भी दो होती हैं। एक इस्लाम की और एक उनकी जिनको इस्लाम अपना विरोधी मानता है। पाकिस्तान में कभी भी अमन चैन नहीं होगा अगर पाकिस्तान सच का सामना नहीं करेंगे।

पं. भू देव साहित्याचार्य
मो. 9213107453

****

बहुत–बहुत साधुवाद

देश भर में बैकों व ड़ाक घरों के बाहर,

बेहद लम्बी–लम्बी लाईनों में कई–कई घण्टे खड़े होकर,

आम लोग,

पुराने नोट पाँच सौ व एक हजार रूपये के नोट,

नये नोटों में बदल पायें या न बदल पायें।

लेकिन भ्रष्ट लोगों व बेईमान लोगों की ज़िन्दगी

अवश्य ही मौत के रूप में बदल जायेगी।

देश में फैले भष्ट्राचार व कालाधन के खिलाफ ऐतिहासिक कठोर कदम उठाने के लिये माननीय प्रधान मंत्री जी को बहुत–बहुत साधुवाद।

देशबन्धु,
सन्तोषपार्क, उत्तम नगर नई दिल्ली

****

www.thearyasamaj.org

डॉ. सुदर्शन देव आचार्य वेद वेदांग पुरस्कार से पुरस्कृत

आर्य जगत् के उदीयमान युवा वैदिक विद्वान् ओजस्वी वक्ता, विभिन्न संस्थाओं के मार्गदर्शक, ओड़िया भाषा के अनेक पुस्तकों के सम्पादक तथा कुशल लेखक, भारत स्वाभिमान ट्रस्ट, ओड़िशा प्रदेश के संगठन मन्त्री, गुरुकुल हरिपुर, जुनानी जि.नुआपड़ा (ओड़िशा) के सफल संचालक पूज्य आचार्य डॉ. सुदर्शन देव जी को परोपकारिणी सभा ऋषि उद्यान अजमेर में 133 वें महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह

के अवसर पर डॉ. प्रियव्रतदास वेद वेदांग पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इस पुरस्कार में 21,000/– की नगद राशि, शॉल, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र प्रदान किया गया।

पूज्य आचार्य जी सादा जीवन एवं उच्च विचारों के आदर्श त्यागी तपस्वी एवं साधक प्रवृत्ति के हैं, आपकी प्रेरणा से अब तक शताधिक आदर्श दैनिक अग्निहोत्री परिवार तैयार हुये हैं तथा सत्तर के लगभग आदर्श गृहस्थियों को वानप्रस्थ की दीक्षा से दीक्षित कराके अनेक संस्थाओं में सेवा के लिये नियुक्त किया गया है। अनेक ब्रह्मचारी आपकी प्रेरणा व मार्गदर्शन में अध्ययनरत तथा विविध क्षेत्रों में सेवारत हैं।

डी.ए.वी. आर.के. पुरम् दिल्ली में हुआ 'दिल्ली नही रुकेगी' कार्यक्रम

"नहीं रुकेगी मेरी दिल्ली" द्वारा दिल्ली के विकास को दर्शाते हुए डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल आर.के.पुरम सेक्टर–9 के बच्चों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का आरम्भ स्वागत गान से हुआ उसके पश्चात् नाट्य रूप में नई दिल्ली पुरानी दिल्ली के महत्व को बहुत ही मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री जे.पी. शूर (डायरेक्टर पब्लिक एण्ड एडिड स्कूल) श्री रविन्द्र कुमार (सचिव, डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी) श्री एच. एल. भाटिया, मैनेजर, श्रीमती एवं श्री साहनी जी, श्रीमती गिरीजा (पूर्व प्रधानाचार्या डी.ए.वी. वसंत कुंज स्कूल) उपस्थित थी। नृत्य नाटिका द्वारा बच्चों ने दर्शाया कि आज दिल्ली विश्व प्रसिद्ध है परन्तु कई समस्याओं से ग्रसित है। बच्चों ने कविता व नृत्य द्वारा सपनों की दिल्ली के बारे में भी जानकारी दी और दिल्ली वासी होने पर गर्व महसूस किया।

बच्चों ने योगासन किए और बताया कि योग जीवन का अभिन्न अंग है। इसी कारण 21 जून को अन्तराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। दिल्ली जिससे हम जुड़े है वह हमारा घर है। यहाँ खुशियों के सारे रंग हैं, अलग–अलग जाति, धर्म, और प्रान्त से होने पर भी हम संग हैं। यहाँ गलियाँ भले ही छोटी हों पर कुछ कर दिखाने के बुलंद हौसले हैं। हम इस दिल्ली के सलामत और रोशन रहने की दुआ करते हैं। प्रस्तुत गीत में बच्चों के साथ अतिथिगण व अभिभावक भी उत्साह पूर्वक शामिल हो गए।

कार्यक्रम के अंत में अपनी दिल्ली की सभी समस्याओं को नुक्कड़ नाटक 'जागो दिल्ली जागो' द्वारा प्रभावशाली ढंग से दर्शाया गया। सभी ने प्रण लिया कि हम अपनी दिल्ली को न गंदा करेंगे न गंदा करने देंगे। दिल्ली के विकास के लिए सदा तत्पर रहेंगे। मुख्य अतिथियों द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में जीते गए पुरस्कार बच्चों को वितरण किए गये।

डी.ए.वी. सोनीपत में पूर्व-छात्र-मिलन-समारोह आयोजित हुआ

डी.ए.वी. मल्टीपर्पस पब्लिक स्कूल सोनीपत विद्यालय के सभागार में विगत वर्षों में विद्यालयीय शिक्षा पूरी कर जीवन की ऊँचाइयों तक पहुँचने वाले भूतपूर्व–छात्र–छात्राओं के लिए **'एल्यूमनाइ–मीट 2016'** के नाम से एक मिलन–समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में सोनीपत व आस–पास से बड़ी संख्या में भूतपूर्व छात्र–छात्राओं ने दीपोत्सव के वातावरण में उत्साह पूर्वक अपनी उपस्थिति दर्ज की और इन ऐतिहासिक क्षणों का लुत्फ उठाया। इस अवसर पर सभी छात्र–छात्राओं ने विद्यालय में बिताए अपने भूले बिसरे क्षणों को याद किया और अपने अतीत के पृष्ठों को पल्टा। विद्यालय के विद्यार्थियों ने सभी

के स्वागत में स्वागत–गान व डी.ए.वी. गान प्रस्तुत किया। राजस्थानी नृत्य की प्रस्तुति ने सबको भाव विभोर कर दिया।

विद्यालय के भूतपूर्व–छात्र व इन्टर नेशनल स्कूल के डायरेक्टर श्री हिमांशु कुच्छल ने अपने विद्यालय के दिनों को याद करते हुए प्राचार्य महोदय को बधाई दी कि उन्होंने इस मिलन–समारोह का आयोजन कर सभी को एक नया मंच प्रदान किया जहाँ पर पूर्व छात्र एकत्रित होकर अपने अनुभव सांझा कर सकेंगे। आईआईटीयन शशांक मित्तल ने अपने अनुभवों को सांझा करते हुए छात्रों को इस प्रकार के समारोहों में शिरकत करने का सुझाव दिया। अंकित बिस्वाल का यह कहना कि वह जब विद्यालय आया था तब भी रोया था और जब गया था तब भी और आज भी इसकी यादें जहन में वैसी ही ताजा हैं, सबको छू गया।

प्राचार्य महोदय ने भी उपस्थित सभी भूतपूर्व छात्र–छात्राओं का अभिनन्दन करते हुए आश्वासन दिया कि यह परम्परा भविष्य में भी जारी रहेगी। उन्होंने प्रत्येक बैच में से एक प्रतिनिधि का चुनाव कर उन्हें उत्तरदायित्व सौंपा कि वे भविष्य में इस प्रकार के आयोजनों में अपनी सक्रिय भागीदारी का निर्वाह करें। समारोह का समापन शांति–पाठ के साथ सम्पन्न हुआ।

वेद सप्ताह का आयोजन

डी.ए.वी. सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, भेरी, गुरदासपुर के तत्वावधान में वेद सप्ताह का आयोजन समारोह पूर्वक किया गया। पहले दिन इस दौरान वेद मन्त्रों का पाठ/उच्चारण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। वेद विचार आधारित जीवन मूल्यों पर आधारित भजनों की गायन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के दौरान वेद आधारित विषयों पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। प्रतिदिन यज्ञ में चारों वेदों के चुने हुए मन्त्रों की विशेष आहुतियाँ दी गई। इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य और सिद्धांतों को लेकर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी कार्यक्रम प्रिन्सिपल रेणु त्रेहण की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। इन कार्यक्रमों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पाने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 14/15-12-2016
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39\57

मोनेट डी.ए.वी., हसौद मंदिर में सहमंत्री जी ने किया प्रवचन

मोनेट डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, मंदिर हसौद, रायपुर में को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सहमंत्री श्री सत्यपाल आर्य जी का आगमन हुआ। विद्यालय के प्राचार्य श्री आर. जे. के. रेड्डी द्वारा श्री आर्य जी का वक्तव्य हेतु विनम्र आव्हान किया गया। श्री आर्यजी ने प्रातःकालीन प्रार्थना सभा में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए अपने प्रबुद्ध उद्बोधन द्वारा विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

श्री आर्यजी ने मनुष्य को अन्य जीवधारियों से श्रेष्ठ बताया, क्योंकि सिर्फ मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो स्वार्थ भावना से ऊपर उठकर परोपकार के विषय में सोचता है और परस्पर प्रेम और सहयोग का आदान–प्रदान करता है। उन्होंने विद्यार्थी जीवन को सर्वश्रेष्ठ बताते हुए कहा कि यह अवस्था व्यक्तित्व निर्माण की अवस्था है। अतः प्रत्येक विद्यार्थी को विशिष्ट बनने के लिए औरों से अधिक परिश्रम करना होगा। श्री आर्यजी के प्रेरणामय उद्बोधन के लिए विद्यालय के प्राचार्य श्री आर.जे.के. रेड्डी ने उनका कृतव्यतापूर्ण धन्यवाद किया।

डी.ए.वी. बल्लभगढ़ में लगाया गया रक्तदान शिविर

आर्य युवा समाज डी.ए.वी. विद्यालय बल्लभगढ़ के तत्त्वाधान में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि श्री पार्थ गुप्ता, एस. डी. एम. बल्लभगढ़, ने दीप प्रज्ज्वलित करके रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया। श्री गुप्ता ने रक्तदाताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि रक्तदान समाज सेवा का सबसे अनमोल दान है। प्रत्येक व्यक्ति को रक्तदान जीवनदान के इस पुनीत कार्य में अपना योगदान देकर मानवता से जुड़ने का संकल्प लेना चाहिए। एसडीएम पार्थ गुप्ता ने समाज सेवा के इस प्रयास के लिए डी. ए.वी. बल्लभगढ़ की सराहना की तथा भविष्य में भी इस प्रकार के जन कल्याण से जुड़े कार्यों को करने की प्रेरणा दी।

श्री गुप्ता ने इस अवसर पर छात्रों से भी मुलाकात की और उनको प्रेरणा दी कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए जहाँ कठोर परिश्रम की आवश्यकता है वहीं परोपकार, देश, समाज व मानव–सेवा के कार्यों में भी बढ़चढ़ कर हिस्सा लेने की जरूरत है।

विद्यालय की प्रधानचार्या श्रीमती रीना वशिष्ठ काचरू ने मुख्य अतिथि, श्री पार्थ गुप्ता को व अन्य अतिथि महानुभावों को गीता भेंट कर उनका स्वागत व सम्मान किया।

इस रक्तदान शिविर में 60 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। वीके हास्पिटल से आई चिकित्सकों की टीम ने रक्त एकत्रित किया। यह रक्तदान शिविर रोटरी क्लब ऑफ फरीदाबाद, संस्कार, भारत स्वाभिमान ट्रस्ट, फरीदाबाद व पतंजलि योग केन्द्र सै–2, बल्लभगढ़ आदि समाजसेवी संस्थाओं के सहयोग से किया गया। इस अवसर पर सन्दीप सिंहल, सुनील गुप्ता, अंकुर सिंह, राजेश भाटी, टीकाराम भारद्वाज, मा तेजपाल शर्मा, नंदलाल कालड़ा, कुलभूषण आर्य आदि उपस्थित रहे। रक्तदान शिविर के सफल आयोजन में योगाचार्य जयपाल शास्त्री सहित विद्यालय के अध्यापकों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डी.ए.वी. पालमपुर में हुआ वैदिक व आध्यात्मिक प्रवचनों का आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पालमपुर के प्रांगण में योग साधक, ओजस्वी वक्ता एवम् क्रान्तिकारी प्रचारक आचार्य–आर्य नरेश जी के वैदिक व आध्यात्मिक प्रवचनों का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का आरंभ विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री वी.के. यादव को अध्यक्षता में हुआ। आचार्य जी ने उपस्थित छात्र–छात्राओं को अनेक उदाहरणों द्वारा चरित्र निर्माण, सत्य का पालन व अनुशासन का उपदेश देते हुए कुछ महत्त्वपूर्ण बातों का पालन करने का उपदेश दिया। जैसे VKS3e~ का ध्यान, वेद का ज्ञान, यज्ञ का अनुष्ठान, ईश्वर का धन्यवाद, देशहित बलिदान आदि।

आचार्य जी ने लगभग आठ भाषाओं में 50 प्रस्तुकों का संपादन व लेखन किया है। महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन व सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरणा लेकर आपने अभियंता के पद से त्याग पत्र देकर वैदिक ज्ञान प्राप्त किया तथा अपना शेष जीवन समाज के लिए समर्पित किया है।

कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के धर्मशिक्षक श्री कर्णवीर शास्त्री जी ने आचार्य जी का धन्यवाद किया।

डी.ए.वी. लारेंस रोड अमृतसर में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय जी को श्रद्धांजलि दी गई

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लॉरेंस रोड, अमृतसर ने शेरे पंजाब लाला लाजपतराय जी को श्रद्धांजलि दी गई। इस महान स्वतंत्रता सेनानी को श्रद्धांजलि देने के लिए विद्यार्थियों द्वारा विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। उस सभा में विद्यार्थियों को लाला लाजपत राय द्वारा भारत के स्वतंत्रता संग्राम में दिए गए योगदान के बारे में जानकारी दी गई। साईमन कमिशन के लाहौर पहुँचने पर स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किए गए विरोध की घटनाओं को विद्यार्थियों ने लघु नाटक के रूप में प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर विद्यार्थियों ने देशभक्ति के गीत गाए और प्रेरणात्मक कविताएँ पढ़ी। अंत में विद्यार्थियों ने महान नेताओं और स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा सिखाए गए न्यायपथ और नैतिक मूल्यों को अपनाने की शपथ ली।

स्कूल की प्रधानाचार्या डॉ. (श्रीमती) नीरा शर्मा जी ने कहा कि लाला जी के विचारों को मन में रखना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को बताया कि लाला लाजपतराय जी इस बात पर विश्वास करते थे कि राष्ट्र के हित में हमें एकता से न्याय के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें इस समय कंधे से कंधा मिला कर अन्याय के विरूद्ध आवाज उठानी चाहिए।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**